ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 2 अंक : 5 जून - जुलाई 2012 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

गुरु पूर्णिमा (व्यास पूर्णिमा)	डा. महेश पारासर	4
शनि साधना के लाभ	डा. रचना भारद्वाज	6
''चतुर और मजाकिया होते है मिथुन लग्न वाले''	डा. शोनू मेहरोत्रा	7
गुरु राशि परिवर्तन किसके लिये शुभ किसके लिये अशुभ	श्रीमती कविता बंसल	8
जय साँचोली माँ का व्रत	पं. व्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	9
लग्नेश का अन्य भावेशों से विनिमय योग	सीता राम सिंह	10
नयनों में क्या जी.....?	डॉ.लक्ष्मीनारायण शर्मा	11
ज्योतिष की नजर में रोग	मोनिका गुप्ता	12
वाणी ऐसी बोलिए	श्रीमती नूतन	12
ड्राईगरूम करें फिट	श्री पवन कुमार मेहरोत्रा	13
साढेसाती एवं ढैया के दोष निवारण के लिये "महिमामंडित पारद माला"	पं. दिलीप उपाध्याय	13
वास्तु बताये धन की दिशा	श्रीमती रेनू कपूर	14
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	15.16
'लोभी नाई'	विजय शर्मा	17
पूजा – सामिग्री		23

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। **RNI No. UPHIN 41286/24/1/2010-TC**

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। 500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

गुरु पूर्णिमा (व्यास पूर्णिमा)

व्यास पूर्णिमा को ही गुरु पूर्णिमा कहा जाता है। यह पूर्णिमा आषाढ़ मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है। आदिकाल में विद्यार्थी गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त करने जाते थे। छात्र इस दिन श्रद्धा भाव से प्रेरित अपने गुरु का पूजन करके अपनी शक्ति के अनुसार दक्षिणा देकर उन्हें प्रसन्न करते थे। इस दिन पूजा से निवृत्त होकर अपने गुरु के पास जाकर वस्त्र, फल, फूल व माला अर्पण करके उन्हें प्रसन्न करना चाहिए।

गुरु का आर्शीवाद कल्याणकारी और ज्ञानवर्धक होता है। चारों वेदों के व्याख्याता व्यास ऋषि थें हमें वेदों का ज्ञान देने वाले व्यासजी ही है। इसलिये वे हमारे आदि गुरु हुए। उनकी स्मृति को ताजा रखने के लिये हमें अपने–अपने गुरुओं को व्यास जी का ही अंश मानकर उनकी पूजा करनी चाहिए।

मंगला गौरी की पूजा– श्रावण मास में जितने भी मंगलवार आऐं उतने ही मंगलवार को मंगलगौरी का व्रत करके पूजा करनी करने का विधान है। पूजा की विधि इस प्रकार है–सिर सहित नहाकर पूजा करने बैठे। पहले एक पाटे पर लाल और सफेद कपड़ा बिछाएँ। सफेद कपड़े पर चावल की नौ ढेरी बनाकर नौ ग्रह बना दीजिये और लाल कपड़े पर गेहूँ की 16 ढेरी बनाकर षोडश मातृका बनाएं और किसी पट्टे पर थोड़े–से चावल रखकर गणेश को विराजमान करें। और पट्टे के पास में थोड़ा–सा गेहूँ रखकर उसके ऊपर कलश रखें। आटे का चार मुख वाला दीपक बनाकर उसमें रुई की 16–16 तार की चार बत्ती बनाकर जलाएँ। 16 धूपबत्ती जलाकर पूजा करने से पहले यह संकल्प कर लें। सबसे प्रथम गणेश जी की पूजा करें, फिर जल, पंचामृत, मोली, जनेऊ, चन्दन, रोली सिन्दूर, चावल, फूल, बेलपत्र, प्रसाद, फल, पाँच मेवा, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, दक्षिणा, गुलाल आदि चढ़ाकर धूप और दीपक जलाएं। फिर कलश की पूजा करके कलश में पानी डाल दें। पाँच आम के पत्ते लगाएं, एक सुपारी, पंच रत्न लगा दें। थोड़ी–सी मिट्टी, दक्षिणा आदि कलश में अन्दर डाल दें। फिर कलश पर एक ढक्कन में थोड़ा–सा चावल रखकर उसके ऊपर दख दें और थोड़ी–सी घास कपड़े में बाँध कर ढक्कन में रख दें। बाद में कलश की पूजा करें। गणेश की पूजा करें। उसी तरह कलश की पूजा करें, कलश में सिन्दूर बेलपत्र चढ़ायें। नौ ग्रह की भी पूजा उसी विधि से करें। परन्तु जनेऊ ना चढ़ायें और हल्दी, मेंहदी, सिन्दूर भी चढ़ायें। फिर बाद में मिलाकर देवी–देवता को चढ़ा दें। बाद में पण्डितजी के टीका लगाकर मोली बाँध दें और अपने भी बाँध लें। फिर मंगला गौरी की पूजा कर एक पटरे पर थाली रख, उसके ऊपर चकला रखें। चकले के पास में आटे का सिल–बट्टा बनाकर रखें और चकले के ऊपर गंगाजी की मिट्टी से मंगला गौरी बनाकर रखें। पहले मंगलागौरी का जल, दूध, दही, घी, शहद, चीनी, पंचामृत से नहलाएँ फिर उसको कपड़े और नथ पहनाएँ। बाद में रोली, चन्दन, सिन्दूर, हल्दी चावल, मेंहदी, काजल लगाएँ। 16 माला चढ़ाएँ। 16 आटे के लड्डू, 16 फल, 5 प्रकार की मेवा, 16 प्रकार का अन्न, 16 जगह जीरा, 16 जगह धनिया, 16 पान, 16 सुपारी, 16 लौंग, 16 इलायची, 1 सुहाग पिटारी चढ़ायें। उसमें ब्लाऊज, रोली, मेंहदी, काजल, सिन्दूर, कंघा, शीशा, नाला, 16 चूड़ी की जोड़ी और अपनी इच्छानुसार दक्षिणा चढ़ाएं। बाद में कथा सुनें। कथा सुनने के बाद आटे के 16 दीपक बनाकर उसे नाले की 16 तार की 16 बत्ती बनाकर कपूर रखकर आरती करके परिक्रमा करें। इसके बाद 16 आटे के लड्डू का सीदा निकालकर सासूजी के पैर छूकर उन्हें दे दें। बाद में स्वयं खाना खा लें। भोजन में अनाज की चीज खाएँ। नमक नहीं खाना चाहिए। दूसरे दिन सुबह मंगलागौरी का विसर्जन करने के बाद ही नमक का सेवन करें।

उद्यापन :– विक्रम संवत् का मंगलागौरी का उद्यापन 20 या 16 मंगलवार करने के बाद ही करना चाहिए। जिस दिन उद्यापन करें उस दिन कुछ नहीं खाना चाहिए। शाम को सिर सहित सन करके गठजोड़े से पूजा करनी चाहिए। पूजा चार ब्राह्मणों से करायें। एक चौकी के चारों पैरों की तरफ केले का खम्भबांध दें। एक ओढ़ने से ढके मण्डप में कलश रखकर उसके ऊपर एक कटोरी ढककर सोने की मंगला गौरी बनवाकर उसमें बिठाएँ। मंगलागौरी को साड़ी, ब्लाऊज, ओढ़नी उढ़ाकर नथ पहनाएँ। सुहाग की सारी चीजें चढ़ायें।

मंगलागौरी की मंगलवार को पूजा करने के बाद जप का गान करें। चार पीतल के भिगोनों में चावल, रुपया डालकर रख दें। जो

कि चारों ब्राह्मण को दे दें। चाँदी की सिल, सोने का लोटा बनाकर रखें। बाद में हवन करके कहानी सुनने के बाद आरती करें।

चांदी के 16 दीपक बनवाकर उसमें सोने की 16 बत्ती भी डाल दें। फिर एक चाँदी के कटोरे में आटे के 16 लड्डू, रुपया और एक ब्लाऊज रखकर सास के पैर छूकर दें। जिन पण्डितों ने पूजा सम्पन्न की हो उनको खाना खिलाकर, धोती, अंगोछा, माला, लोटा व दक्षिणा दें।

महेश पारासर

अमृत वचन

संसार में अथवा जीवन में जो कुछ घटता है वह परमात्मा की निश्चित योजना व उसके विधि-विधान के अनुसार ही घटता है जिसमें कोई फेर-बदल नहीं होता। इसका ज्ञान हो जाने पर मनुष्य शान्ति को प्राप्त होता है।

पाठकों के पत्र

श्रृदेय गुरुजी, सादर नमस्कार

मैं भविष्य निर्णय के कुछ अंक पढ़े। मुझे इनसे बहुत सी अमूल्य जानकारी प्राप्त हुई। आपकी पत्रिका ज्योतिष की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही है। आपकी पत्रिका में प्रकाशित भविष्यफल बहुत सटीक बैठता है। आपकी पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

मनीषा दुबे, गाजियाबाद

आदरणीय पारासर जी

ज्योतिष वह विज्ञान है जो भूत, वर्तमान और भविष्य की जानकारी प्रदान करता है। ज्योतिष के क्षेत्र में आपकी भविष्य निर्णय द्विमासिक पत्रिका अपना एक अलग स्थान प्राप्त करेगी, मेरा पूर्ण विश्वास है। पत्रिका में प्रकाशित लेख ज्ञान में तो वृद्धि करते ही है साथ ही समस्याओं के समाधान का मार्ग दिखाते है। जिसके लिए आपको व आपकी टीम को कोटि–2 प्रणाम।

धन्यवाद ।

सधन्यवाद

श्री रमेश सिंह , रायपुर

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न– मेरी कुण्डली में कर्ज–मुक्ति तथा आर्थिक सम्पन्नता का योग है या नही। यदि हाँ तो कब तक?

उत्तर– वर्तमान में आपकी गुरु की महादशा चल रही है। समय गोचरानुसार भी अनुकूल नही है। गुरु की पूजा व दान करें। पक्षियों को दाना चुगायें। ऋणमुक्ति यंत्र व मंत्र की उपासना लाभ देगी।

ओम प्रकाश शर्मा, ग्वालियर।

प्रश्न– व्यापार में जितना धन डालता हूँ। उसकी बढोत्तरी नहीं होती है। कर्ज की स्थिति ही बनी रहती है।

उत्तर– आपकी समस्या के समाधान के लिए ये उपाय करें–

1. रोजाना सूर्य भगवान् को ताबें के बर्तन से अर्घ दें।
2. ऋणमुक्ति यंत्र अपने पास रखें एवं त्रिकोण मंगल यंत्र की रोजाना पूजा करें।
3. पन्ना रत्न कनिष्ठा उगली में बुधवार को धारण करें।

समीर श्रीवास्तव, अजमेर। **डा.महेश पारासर**

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– एक वर्ष पूर्व मैंने काफी समय से बन्द एक मकान खरीदा ततपश्चात उसकी मरम्मत करवा कर वहाँ निवास करना शुरू किया। जब से उस मकान में रहने पहुँचा हूँ, लगभग सभी लोग बीमार रहते है, मुझे भी ढंग से नींद नही आती, कुछ लोग कहते हैं कि यह मकान ठीक नही है। मकान का नक्शा भेज रहा हूँ। सही मार्गदर्शन करें।

पंकज यादव–कानपुर

समाधानः– वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके मकान में ईशान कोण में बने हुए शौचालय ठीक नहीं है। आप इनको वहाँ से मध्य पश्चिम दिशा की ओर स्थानान्तिरत करें इसके अतिरिक्त आपके मकान के नैऋत्य कोण में जो स्थान खाली है वह काफी नीचा है उस क्षेत्र को ऊंचा करें तथा वहाँ सम्भव हो तो कमरा बनावायें आप बस इन दोनों कमियों को दूर करें। शीर्घ लाभ मिलेगा। यदि सम्भव हो तो रोजाना सुबह शाम गायत्री मंत्र की कैसिट घर मे बजाया करें।

समस्याः– मेरे व मेरे पति के रिश्ते दिन प्रति दनि खराब होते जा रहे हैं। अपने मकान का कच्चा नक्शा हाथ से बना कर तथा हम दोनों की कुण्ड़ली प्रेषित कर रही हूँ। कारण व उपाय बतायें।

सोहिता कंसल–आगरा

समाधानः– वास्तुशास्त्र के अनुसार आपका बेड़रूम आग्नेय कोण में स्थित है यह ठीक नही हैं। आप अपना बेड़रूम आग्नेय कोण से हटाकर नैऋत्य कोण में ले जायें अपने घर के शौचालय को मध्य पश्चिम या फिर उत्तर–पश्चिम में स्थानान्तरित करें। ईशान कोण में एक गणेश जी की मूर्ति की फिर तस्वीर लगायें तथा रसोई घर को नैऋत्य कोण से हटाकर तुरन्त आग्नेय कोण में ले जायें। इससे काफी राहत मिलेगी। जहाँ तक सवाल दोनों की कुण्ड़ली का है तो आप तुरन्त एक पन्ना धारण करें तथा अपने पति को एक गोमेद धारण करवायें। चमत्कारिक लाभ प्राप्त होगा।

पं. अजय दत्ता

मो. 9319221203

शनि साधना के लाभ

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली
फोन- 09717195756, 09999234781

यदि आपका जन्म शनिवार या शनि के नक्षत्र–पुष्य, अनुराधा या उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में हुआ हों। यदि आपकी राशि मकर या कुंभ हो (मकर और कुंभ का स्वामी शनि है।) यदि आपको काला या नीला रंग विशेष रुप से पसंद है। यदि आपको साढें साती चल रही है। यदि आपकी राशि पर शनि ढैय्या चल रही हो।

यदि आप मिल, फैक्टरी, कारखाने, लोहे के कार्य, ट्रेवल्स, ट्रांसपोर्ट, आयात–निर्यात, कोयले का कार्य, तेल, पेट्रोलियम, ड्रग्स, मेडिकल, प्रेस, कोर्ट (न्यायालय) आयकर, इंजीनियरिंग आदि संबंधित कार्य करते हैं। यदि आपके व्यापार में घाटा, परेशानियां, बाधाएं आ रही हो, सारे प्रयत्न निष्फल जा रहें हो।

यदि आप शनि के असाध्य रोग किडनी, लकवा, घुटने, पैर, हृदय रोग, मधुमेह, पागलपन, दाहिनी ओर दर्द, दाद, खाज, खुजली जैसे रोगों से परेशान हों। यदि आपकी कुण्डली में शनि शत्रु राशि संबंधित हो। यदि आप कोर्ट, कचहरी, मुकदमेबाजी से परेशान हों तो अति आवश्यक रुप से क्रूर मगर अति शीघ्र प्रसन्न होने वाले दयालु श्री शनिदेव जी की आराधना, साधना, शनि अभिषेक जरुर करें।

शनि पूजन विधि :- **आसनम् समर्पयामि**–आसन दें, **पाद्यं समर्पयामि**–चरणों में जल अर्पित करें, **अर्ध्य समर्पयामि**–पुनः जल छोंडें, **आचमनीयम समर्पयामि**–पुनः जल छोड़ें, **स्नानं समर्पयामि**–स्नान हेतु जल समर्पित करें, **वस्त्रं समर्पयामि**–काला कपड़ा आदि, **गंध समर्पयामि**– सुगंधित सामग्री अगरबत्ती भेंट करें, **पुष्पमाल्यां समर्पयामि**–पुष्पमाला अथवा पुष्प चढ़ायें, **धूपं समर्पयामि**–अगरबत्ती धूप जलायें, **दीपं समर्पयामि**–सरसों तेल का दीपक जलायें, **अक्षतं समर्पयामि**–काले चावल चढ़ायें, **नैवेद्यं समर्पयामि**–काले तिल के मिष्ठान का भोग लगावें, **दक्षिणां समर्पयामि**–दक्षिणा चढ़ायें,**नमस्कारम् करोमि**–नमस्कार करें। इसके पश्चात् शनि का अपनी यथा शनि जाप करें।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः ऊँ सूर्यपूत्रों दीर्घदेही विशालासा शिवप्रिया :- मंदचारी प्रसन्नात्मा पीड़ा हरतु में शनि
'' ऊँ प्रां प्रीं प्रौ सः शनैश्चराय नमः ''

शनि उपासना के नियम- शनि उपासना हेतु यंत्र रखें। शनि आव्हान एवं स्थापना काले पुष्प या बिल्व पत्र और काले अक्षत लेकर (अथवा सामग्री के अभाव में हाथ जोड़कर) शनि देव का आव्हान निम्न–लिखित मंत्र से करें।

शनि आव्हान

नीलान्जन समाभासं रविपुत्र यमाग्रजम।
छायामार्तण्ड सम्भूतं नमामि शनैश्वरम्।।

नीलम के समान जिनकी दीप्ति है। जो सूर्य भगवान के पुत्र और यमराज के भ्राता हैं, ऐसे छायानंदन शिवभक्ति शनि को अत्यंत भक्तिभाव से आव्हान करता हूँ।

शनि का ध्यान :- मैं ऐसे शनि को प्रणाम करता हूँ जिनके पिता सूर्यदेव, माँ छाया और जो यमराज के बड़े भाई हैं। जिनका शरीर विशालकाय एवं श्यामरंग का है, जो शिवजी को अत्यंत प्रिय है। जो ग्रहों में प्रधान न्यायाधीश माने जाते हैं, जो हाथों में लोहे का बना त्रिशुल, धनुषबाण लिए हुए एक हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में भक्तों का अभयदान देने वालें है। इसके पश्चात् शनि मंत्र– शनि स्त्रोत का पाठ करें।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः
ऊँ सूर्यपूत्रों दीर्घदेही विशलासा शिवप्रिया
मंदचारी प्रसन्नता पीड़ा हरतु में शनि
ऊँ प्रां प्रीं प्रौं स शनैश्चराय नमः

शनि स्तोत्र :- जब साढे साती की दशा हो या शनि की दशा चल रही हो एवं बिना किसी दशा के भी जो व्यक्ति रोजाना शनि स्तोत्र का तीन बार पाठ करता है उस पर शनि देव की असीम कृपाा रहती है।

शनि साधनायें:- बीज मंत्र जाप विधान–नित्य नियमित सूर्य उदय से पूर्व स्नान करके शनिदेव के आगे तेल का दिया जलाकर बैठें। 100 ग्रा. गुड़ में 25 ग्रा. काली तिल मिलाकर शनिदेव के आगे भोग रखें शनिदेव के बीज मंत्र – **ऊँ शं शनैश्चराय नमः।।** का 3 पाठ करें और पाठ के बाद शनिदेव का प्रसाद किसी बड़े पेड (वनस्पति) के नीचे जीव जन्तुओं के लिये अपनी मनोकामना बोलकर डाल दें। यह प्रयोग लगातार 40 दिन करने से शनिदेव का क्रोध शांत

शेष पेज 20 पर.....

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
East of Kailash, New Delhi - Ph. **09717195756**
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2850660

''चतुर और मजाकिया होते है मिथुन लग्न वाले''

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता (अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ)
9412257617, 9319124445
e-mail. mehrotraashonu@gamail.com

मिथुन लग्न कालपुरूष की कुंडली में तीसरी राशि है। यह मृगशिरा नक्षत्र के दो चरण, आर्द्रा के चार चरण और पुनर्वसु के तीन चरण से मिलकर बनती है। विषम राशि होने के कारण पुरूष राशि है। इस राशि में कोई ग्रह न तो उच्च का होता है। न ही नीच का। यह राशि पश्चिम दिशा का प्रतिनिधित्व करती है। मिथुन शीर्षोदय राशि है। यह एक क्रूर राशि है। मिथुन लग्न वालों का स्वामी बुध होता है। इसके देवता भगवान विष्णु है। मिथुन राशि वाले को विष्णु सहस्त्र नाम का पाठ अवश्य करना चाहिये।

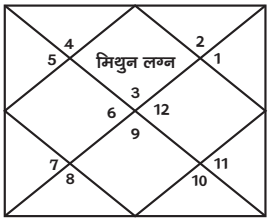

मिथुन का वास वस्ती के पास है। इसलिये इस लग्न के जन्मे लोग प्रकृति पसंद होते है और साथ ही आधुनिक भौतिक वस्तुओ को प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं। इस लग्न वाले बागवानी सुंदर फूलों वाले पौधों को लगाना और अपने साथिओं के साथ बगीचे में बैठना बहुत पंसद करते है। इस लग्न के जातक अकेले रहना पसंद नही करते है। यह हमेशा ग्रुप में रहना चाहते है। यह जीवन में अकेले उन्नति कम कर पाते है। इसलिये उनको एक साथी की आवश्यकता पड़ती है। मिथुन राशि के चिन्ह में दो लोगों के चिन्ह बने है यह दरसाता है। यह एकाकी जीवन का विरोध करते है।

मिथुन लग्न में जन्म लेने वाले जातक के प्रायः हाथ पैर लंबे और कमजोर होते है। चेहरे पर तीक्ष्णता और प्रसन्नता टपकती है। मिथुन लग्न के जातक के नेत्र बहुत आकर्षित, गहरे मतवाले अर्थात मस्ती भरे होते हैं। इस लग्न के लोग क्रियाशील और गतिशील होते है। प्रायः देखा गया है। कि उनका चेहरा भरा होता है। दाढ़ी के पास कुछ दबाब सा होता है। उनका दिमाग हर समय चलता रहता है। जातक की लिखने पढने में रूचि होती है और तर्को के आधार पर कार्य करते है। बात बनाने में निपुण होते है।

कलाप्रेमी होना, हंसी मजाक, चुटकले सुनाना और व्यंग करना इनकी फितरत होती है। इस लग्न के जातक में विषम गहराई से समझने की अदभुत क्षमता होती है। यह कठिन से कठिन विषय को सरल से सरल तरीके से पेश कर सकते है। यदि कुंडली में गुरू अच्छा है। तो जातक अच्छा पत्रकार हो सकता है। मिथुन लग्न वालों को अपनी योग्यता और बौद्धिक क्षमता पर काफी भरोसा होता है। लेकिन भरोसा जब अहंकार में बदल जाता है। तो उनके पतन में बहुत थोडा ही समय लगता है। यह जातक अपना काम निकालने में बहुत माहिर होते है। यदि कुंडली में पंचम भाव बिगड़ जाये तो दूसरों को धोखा देने और धूर्तता पूर्ण व्यवहार करने से पीछे नहीं हटता है। मिथुन लग्न की एक खास बात देखी गई है कि कहता कुछ है और करता कुछ है।

ऐसा जातक बहुत खर्चीला होता है और अपनी फिजूलखर्ची को भी जायज ठहराता है। यह अपना क्रोध प्रकट नही करता लेकिन बड़े ही कुटिल ढंग से बदला लेने की चेष्टा करता है।

जिन महिलाओं की मिथुन लग्न होती है। उनको अपने दांपत्य जीवन को बहुत सुखद बना कर रखना चाहिये। अक्सर देखा गया है। कि मिथुन लग्न वाली महिलाओं का दाम्पत्य जीवन गडबड़ा जाता है। इसके पीछे कारण यह है। कि सप्तम भाव में धनु राशि पड़ती है। जो निष्ठुर राशि मानी गई है। मिथुन जातक अच्छा नेता या प्रतिनिधि करने वाला नही होता है। यह अनुयायी बहुत अच्छा होता है। इसको ऐसे समझा जा सकता है। कि यह बेल की तरह है। जिस तरह से बेल पेड़ से लिफ्ट कर अपनी प्रगति करती जाती है। ऐसे ही मिथुन राशि वाले को भी अपनी प्रगति के लिये सहारे की अवश्यकता होती है। यह कोई भी निर्णय लेने से पहले दूसरो पर निर्भर रहते है। महत्वपूर्ण निर्णय लेने में भय लगा रहता है कि कहीं यह निर्णय गलत न हो जाये। ऐसे व्यक्ति आशा वादी होते है। चन्द्रमा की राशी कर्क दूसरे भाव में पडने की वजह से ऐसा जातक चापलूस और चालाक होता है। इसका झुकाव माता पक्ष की ओर नानी नानी, मामा–मामी, मौसी आदि की ओर अधिक होता है। इस लग्न के व्यक्ति को कनिष्ठा में पन्ना धारण करना चाहिये। इसको धारण करने से आत्मबल में वृद्धि होती है। इस जातक को हिजड़ें से आशीर्वाद लेना चाहिये तथा कभी भी अपने दरवाजे से हिजड़े को खाली हाथ नही लौटाना चाहिये। पेड़–पौधे लगाना और इनकी देखरेख करना इन जातकों के लिये उन्नति देने वाला होता है।

❋❋❋

विशेषताऐं

1. मिथुन लग्न वाले व्यक्ति में गहराई से समझने की क्षमता होती है।

2. जीवन में जब भी अंहकार बढ़ता है। तो उसके पतन में बहुत थोड़ा ही समय लगता है।

3. पेड़-पौधे लगाना और उनकी देख रेख करना इन जातकों के लिये उन्नति देने वाला होता है।

गुरु राशि परिवर्तन किसके लिये शुभ किसके लिये अशुभ

डा. (श्रीमती) कविता बंसल
ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता - अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ
मो.- 9897135686, 9219577131

नवग्रहों में बृहस्पति को सर्वाधिक शुभ ग्रह मांगलिक कार्य धन–धान्य, विवाह, ज्ञान, विवेक, वुद्धि, संतान, सामाजिक प्रतिष्ठा का कारक माना गया है। कदाचित वृहस्पति का राशि परिवर्तन किन्हीं राशियों के लिये शुभ–मंगलकारी अपेक्षित फल देने वाला होगा। दक्ष पौत्र अंगिरा पुत्र गुरु बृहस्पति ज्येष्ठ माह कृष्ण पक्ष गुरुवार **17 मई 2012 को प्रातः 09 बजकर 33 मिनट पर वृषभ राशि में प्रवेश कर 24 मई 2013 तक वृषभ राशि में ही विराजमान रहेंगे, इसी मध्य 04 अक्टूबर 2012 से 30 जनवरी 2013 तक वक्री रहेंगे।** प्रत्येक राशि के अनुसार वृहस्पति के अलग–अलग शुभ व अपेक्षित परिणाम दे वाला होगा।

मेष राशि के द्वितीय भावग्रस्त वृहस्पति स्थान 'हानि करों जीव' तर्ज पर पारिवारिक व कौटुम्बिक मतभेद बढ़ाऐगा। पैतृक सम्पत्ति वटँवारे को लेकर कोर्ट कचहरी, मुकदमे इत्यादि में धन का अपव्यय कराऐगा। विद्यार्थीगण को शिक्षा में रुकावटें पैदा होगी। अत्यधिक भागदौड़, पैसा फँसना, आशानुरुप आशातीत लाभ नहीं मिलेगा। मांगलिक कार्यो में व्यवधान उत्पन्न होंगे। खान–पान का विशेष ध्यान रखें। वाणी पर नियंत्रण रखें अन्यथा सम्बन्धों में दरार उत्पन्न होगी। गुरु व बड़ों के सानिध्य से परेशानियाँ दूर होगी। अशुभ प्रभाव से बचने के लिये वृहस्पति की वस्तुऐं दान देना हितकर होगा।

वृष राशि (शत्रु राशि) स्थित वृहस्पति स्वास्थ्य को लेकर कुछ चिताएं देगा लेकिन इसके विपरीत हर दृष्टि से शुभ व लाभकारी रहेगा। संतान पक्ष से शुभ परिणाम प्राप्त होगें। पुत्र संतान की प्राप्ति, विवाह योग्य जातको का विवाह सम्पन्न होगा। व्यापार में वृद्धि, मान प्रतिष्ठा में वृद्धि, आर्थिक सम्पन्नता, भूमि भवन का सुख व भाग्य की प्रबलता बनी रहेगी। सिर दर्द, उदर व्याधि या डिप्रेशन की अवस्था में चिकित्सीय सलाह लें। शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिये वृहस्पति की वस्तुऐं दान देनें व बृहस्पति मंत्र का एक माला जाप करने से आशाँतीत लाभ मिलेंगे।

मिथुन राशि से द्वादश बृहस्पति शुभ व मांगलिक कार्यो में खर्चे कराऐगा। नवीन व्यवसाय, विदेश यात्रा, तीर्थाटन, धार्मिक आयोजनों का लाभ मिलेगा। अधुरे निमार्णाधीन कार्य पूर्ण होंगे। भवन का सुख प्राप्त होगा। जीवनसाथी व संतान से मतभेद बनेंगे। वृद्धजनों के स्वास्थ्य लाभ को लेकर खर्चे बनें रहेंगे। गुरु के वक्रीकाल में पैसा फँसना व दुर्घटनाए होने की सम्भावना होगी। पार्टनरशिप में दरार पड़ने की सम्भावना रहेगी। अशुभ प्रभावों को दूर करने के लिये नियमित केले के वृक्ष की पूजा अर्चना करें। हल्दी–केसर का तिलक माथे पर लगाऐं।

कर्क राशि से एकादश वृहस्पति इच्छित कामनाओं की पूर्ति करने वाला होगा। पदोन्नित, प्रतिष्ठित पद की प्राप्ति होगी। संतान की तरफ से सुखद समाचार प्राप्त होंगे। किये गये प्रयास सार्थक होगे। अच्छे प्रस्ताव व ऑफर मिलेगें। लेकिन स्वास्थ्य के प्रति सर्तकता बरतनी होगी। घर, मकान के सुखों में कमी रहेगी। पति–पत्नि के सम्बन्धों में मधुरता आऐगी। नियमित वृहस्पति मंत्र का जाप व दान करने से शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

सिंह राशि से दशमस्थ वृहस्पति परिवार में धन–मान, प्रतिष्ठा की प्राप्ति कराऐगा। पुराने विवाद दूर होगे, सौहाद्रपूर्ण वातावरण रहेगा। भूमि–भवन का सुख प्राप्त होगा। धन–लाभ पैसों की आवक अच्छी होगी। मंगलकारी कार्यों में खर्चे होंगे। कर्मक्षेत्र में संघर्ष व भागदौड़ के बाद सफलता मिलेगी। किसी के बहकावें में आकर उद्वेलित न हों। नये निवेश करे के लिये समय उचित नहीं है। नित्य विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ व पीली वस्तुओं का मंदिर में दान करने से लाभ होगा। बिमारी में सर्तकता बरतें।

कन्या राशि से नवमस्थ गुरु आपके पराक्रम व पुरुषार्थ में वृद्वि करेगा सत्कार्यों में रुचि बढेगी। तीर्थाटन का लाभ मिलेगा। सामाजिक मान–प्रतिष्ठा का वृद्धि कराऐगा। धार्मिक व आध्यात्मिक कार्यो में बढ़ चढकर हिस्सा लेगें। प्रापर्टी बेचने के लिये समय उचित है। संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। प्रेम प्रयासों में सफलता मिलेगी। पिता की सेहत के प्रति सचेत रहें। वृहस्पति मंत्र का जाप व यज्ञ करने से लाभ मिलेगा।

तुला राशि वाले जातकों के लिये स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही भारी पड़ सकती है। पेट व आँतों की समस्या रह सकती है।

शेष पेज 19 **पर**.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

!!जय साँचोली माँ का व्रत!!

पं. व्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
फोन नं. 09811965774

साँचोली माँ का व्रत विशेषकर चैत्र या आश्विन मास की नवरात्रियों में करने का विधान है। आषाढ़ व माघ मास के शुक्ल पक्ष में पड़ने वाली नवरात्रि भी इस व्रत के लिए उत्तम हैं। साँचोली देवी का स्वरुप गोलोक बिहारी भगवान् श्री कृष्ण की अद्भुत दिव्य लीला का महाप्रसाद है। यह स्वरुप सच्ची भगवती माँ के रुप में जिला मथुरा के अन्तर्गत नन्दगाँव से 8 कि. मी. दूर **'साँचोली गाँव'** में स्थित है। जो जन सच्ची श्रद्धा व भक्ति के साथ इस दिव्य धाम की यात्रा कर माँ साँचोली के श्री चरणों में विनयानवत् हो किसी भी कामना पूर्ति के लिए संकल्प करता है और एक वर्ष तक अनवरत माँ साँचोली की पूजा–आराधना करता है तो निश्चय ही उसके जीवन का संकल्प पूर्ण हो जाता है। माँ साँचोली की कृपा से सन्तान की अभिलाषा वालों को सन्तान की प्राप्ति, निर्धन को धन प्राप्ति, विद्यार्थियों को विद्या प्राप्ति, क्षत्रियों को बल प्राप्ति, ब्राह्मणों को विद्या व ज्ञान की प्राप्ति, क्षत्रियों को बल प्राप्ति आदि–आदि सहज में हो जाती है। विशेषकर यह व्रत भगवान् श्री कृष्ण के कल्याणकारी दर्शनों का लाभ कराने वाला है। शास्त्र कहते हैं कि जब परात्पर परब्रह्म परमात्मा नन्दनन्दन श्री कृष्ण की कृपा हो जाती है तो उसके जीव में भोग और मोक्ष दोनों ही प्राप्त हो जाते हैं। जीवमात्र के चारों पुरुषार्थ धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष सिद्ध हो जाते हैं, क्योंकि अजन्मा, अविनाशी, अखिलेश्वर, देवकीनन्दन भगवान गोविन्द ही एक ऐसे हैं जो चाहे निष्काम हो, समस्त कामनाओं से युक्त हो अथवा मोक्ष चाहता हो, हृदय के अन्दर हो या बाहर प्रकट रुप में हो, जो भी भाव हों, विचार हों उन सभी सम्पत्तियों व युक्तियों को स्थिरता व पूर्णता प्रदान करने वाले हैं। यह पूर्णता का सुअवसर जीवन में तभी प्राप्त हो सकता है जब व्रती स्त्री या पुरुष, बालक या वृद्ध माँ साँचोली की कृपा प्राप्त कर लेता है। बस इस व्रत में व्रती को इतना करना है कि माँ साँचोली को दर्शनोपरान्त संकल्प के साथ अपने निवास स्थान में विराजमान कर लें और नित्य नैमित्तिक कर्मो को पूर्ण करते हुए माँ की षोडशोपचार या पंचोपार पूजा आरम्भ कर दें। एक वर्ष तक लगातार इस नियम का पालन करें तो निश्चय ही माँ की करुणामयी, दयामयी, कृपामयी एवं स्नेहमयी ममता व्रती के जीवन में सम्पूर्ण दैन्यताओं, अपूर्णताओं, विपदाओं आदि को दूरकर मनोवांछित अभिलाषा को पूर्ण कर जीवन को आलोकित कर देगा। साँचोली माँ की आराधना से श्री कृष्ण की अविचल भक्ति प्राप्त होकर जीवन धन्य–धन्य हो जायेगा। इस व्रत के सम्बन्ध में बड़ी सुन्दर कथा है। जो इस प्रकार है:–

कथा – व्रजमण्डल में जहाँ लठामार होली होती है। जिसे भगवान् श्री कृष्ण की लीलास्थली, क्रीड़ास्थली तथा नन्दबाबा की शरण स्थली के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त है; ऐसा एक सुन्दर मनोरम, सुन्दर–सुन्दर वृक्षों के मध्य 'नन्दगाँव' है। द्वापर युग में जब भगवान् श्रीकृष्ण देवकी के गर्भ से अवतरित हुए तो सम्पूर्ण व्रजवासीयों को अपनी मनोरम व अद्भुत आश्चर्यमयी लीलाओं का अवलोकन कराते हुए नन्दगाँव की सीमा तक विस्तीर्ण अम्बिकावन में विचरण किया करते थे, गायों को चराया करते थे। इसी वन में एक सुस्वादु मधुरातिमधुर जल से पूर्ण विशाल सरोवर (तालाब) था। इस तालाब के किनारों पर आम, कदम्ब आदि विभिन्न प्रकार के फलदायी व दिव्य सुगन्धि से परिपूर्ण फूलों वाले वृक्ष मन को मोहित कर लेते थे। अम्बिका वन में विभिन्न प्रकार के पक्षी जैसे– मयूर, कोयल, पपीहा आदि भी सुन्दर–सुन्दर बोलियों के द्वारा जीवमात्र के चित्त को आकर्षित कर लेते थे। कहने का आशय है कि तालाब तथा अम्बिका वन दोनों ही पक्षियों व पशुओं से परिपूर्ण तथा मनोहारी दृश्यों से युक्त थे। उस वन में अनववरत् प्राणी मात्र को आनन्द प्रदान करने वाली

शेष पेज 20 **पर**.....

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

लग्नेश का अन्य भावेशों से विनिमय योग

सीता राम सिंह
एम.ए., एल.एल.एम., ऐस्ट्रोकाऊंसलर
फोन- 011-26910303,09582477685

जन्म कुण्डली के लग्न से बारह भावों की क्रमशः देह, धन, पराक्रम, सुख, पुत्र, शत्रु, स्त्री (पति), मृत्यु, भाग्य, राज्य, लाभ और व्यय संज्ञाएँ यथा नाम तथा गुण है। प्रत्येक भाव अपने स्वामी व शुभ ग्रहों (गुरु, शुक्र, बुध) से युक्त या दृष्टि होने और दुष्प्रभाव रहित होने पर, पूर्ण फल देता है। पाप ग्रह भी यदि अपनी राशि में स्थित हो तो वह भी अपने भाव की पुष्टि करता है। बलवान लग्न व लग्नेश व्यक्ति को आयु, भाग्य, धन व सुख आदि शुभ फलों की प्राप्ति को दर्षाता है। लग्न के बलवान होने पर कुण्डली की अन्य न्यून्ताएँ भी दब जाती है। लग्नेश यदि शुक्र से युक्त होकर शुभ भाव में स्थित हो तो व्यक्ति राज्य मान्य होता है।

ग्रहों के आपसी सम्बन्ध होने से योग का निर्माण होता है। ग्रह–योगों के अनुसार ही मनुष्य को शुभाशुभ फल मिलता है। ग्रह योग मुख्यतः चार प्रकार से बनते हैं–1. एक ही राशि में होना 2. परस्पर पूर्ण दृष्टि होना 3. एक दूसरे की राशि में (विनिमय) होना। तथा 4. स्थान दृष्टि सम्बन्ध होना, जैसे किसी राशि में स्थित ग्रह को राशीश देखे। महर्षि पाराशर ने विनिमय योग प्रथम श्रेणी का माना है, तथा केन्द्र व त्रिकोण भावेशों के राशि विनिमय को सर्वश्रेष्ठ माना है। केन्द्र भाव विष्णु स्थान व त्रिकोण भाव लक्ष्मी स्थान है। अतः इनका सम्बन्ध स्वाभवतः सदैव शुभ फलकारी होता है। ग्रहों की उच्च, मूलत्रिकोण, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री आदि स्थिति योग के फलादेश में उसी अनुपात में वृद्धि करती है। इसके विपरीत दोष–युक्त अथवा पापी ग्रहों के योग से स्वाभवतः शुभ फल का नाश तथा अशुभफल की वृद्धि करती है। इसके विपरीत दोष–युक्त अथवा पापी ग्रहों के योग से स्वभावतः शुभ फल का नाश तथा अशुभ फल की वृद्धि होती है।

जब कोई ग्रह कुण्डली में केन्द्र व त्रिकोण भाव का एक साथ स्वामी होता है तो वह योगकारक (परम शुभ फल दायक) बन जाता है। जैसे कर्क और सिंह लग्न के लिये मंगल ग्रह । लग्न भाव केन्द्र व त्रिकोण दोनों होने से लग्नेश, चाहे वह शुभ अथवा पापी ग्रह हो, योगकारक की तरह शुभ फल देता है। लग्नेश यदि त्रिक (दुःख) भाव का भी अभिपति हो तो उसके लग्नेश की प्रधानता रहती है तथा अशुभ भाव दोष प्रभावी नहीं होता। अपने विशेष गुण के कारण लग्नेश जब अन्य भाव व भावेश से सम्बन्ध बनाता है तो उस भाव के शुभ फल में वृद्धि करता है। विनिमय योग होने पर दूसरे भाव का उत्तम फल व्यक्ति को प्राप्त होता है।

लग्नेश के शुभ प्रभाव का वर्णन आचार्य मंत्रेश्वर ने 'फलदीपिका' ग्रंथ में उस प्रकार किया है।

लग्नेश्वरो यद्भवनेशयुक्तो सद्भावगस्तस्यफलं ददाति।
भावे तदीशे बलभाजितेन भावेन सौख्यं व्यसनं बलोने।।

अर्थात "लग्नेश जिस ग्रह के साथ हो, उस ग्रह के भावों के फल को बढाता है। इसी तरह जिस भाव में लग्नेश हो, इस भाव के फल को भी बढ़ाता है। यदि वह भाव व भावेश बली हो तो अधिक सुख तथा भाव भावेश निर्बल हो तो भाव सम्बन्धी कष्ट होता है। पुनश्चः

दुःस्थाने विपरीतभेतददितं भावेश्वरे दुर्बले।
दोषोऽतीव भवेद् बलेनसाहिते दोषाल्पता जल्पिता।।

अर्थात् षष्ठ, अष्टम, द्वादश भावों में या इनके स्वामी ग्रहों के साथ लग्नेश या कोई भी भावेश बैठा हो तो सम्बन्धित भाव की हानि करता है। यदि विचारणीय भोवश निर्बल होकर षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव में स्थित हो तो अधिक दोष व बली होकर बैठे तो कम दोष होता है। लग्नेश व चन्द्र राशीश दोनों ही 6. 8. 12 भावों में स्थित हो तो व्यक्ति शरीर से दुर्बल होता है।

लग्नेश का अन्य भावेशों से राशि विनिमय (परिवर्तन) का विस्तृत फलादेश इस प्रकार होता है–

1. लग्नेश धन स्थान में और धनेश लग्न में हो तो मनुष्य धनवान, बुद्धिमान, आचारकुशल, धार्मिक और उत्तम भोगों को भोगता है।

2. लग्नेश तृतीय स्थान में और तृतीयेश लग्न में हो तो मनुष्य शारीरिक रुप से निर्बल, अच्छे भ्रातृ सुख वाला, राजमान्य तथा अपने कुल को सुख देने वाला होता है।

3. लग्नेश चतुर्थ में और चतुर्थेश लग्न में हो तो मनुष्य क्षमाशील पिता की आज्ञा मानने वाला, राजकार्य, में ईमानदार और श्रेष्ठ मार्गदर्शक होता है।

4. लग्नेश पंचम में और पंचमेश लग्न में हो तो व्यक्ति स्वाभिमानी, विद्वान, अपने कुल में प्रसिद्ध और मानी होता है।

5. लग्नेश षष्ठ में और षष्ठेश लग्न में हो तो व्यक्ति रोगरहित, उत्तेजित,सशक्त शरीर वाला, धनी और संग्रह की प्रवृत्ति वाला होता है।

6. लग्नेश सप्तम में हो और सप्तमेश लग्न में हो तो व्यक्ति अपने पिता की सेवा करने वाला, स्त्री के प्रति चंचल, और अपने साले के आधीन होता है।

7. लग्नेश अष्टम में हो और अष्टमेश लग्न में हो तो व्यक्ति के मन में जुआ, सट्टा, लाटरी के प्रति आकर्षण होता है। ऐसा व्यक्ति चोरी की आदत वाला, और राजा या जनता से दंडित किया जाता है।

8. लग्नेश नवम में हो और नवमेश लग्न में हो तो व्यक्ति विदेश में सफल धर्माचरण करने वाला, तथा राज सम्मानित होता है।

लग्नेश दशम में हो और दशमेश लग्न में हो तो वह व्यक्ति उच्च पदाधिकारी, सुन्दर, धनवान और प्रसिद्ध होता है।

10. लग्नेश एकादश भाव में हो और एकादेशश लग्न में हो तो मनुष्य अच्छे कार्य करने वाला दीर्घायु, वैभवयुक्त व विद्वान होता है।

11. लग्नेश द्वादश भाव में हो और द्वादशेश लग्न में हो तो व्यक्ति के अनेक शत्रु हों। वह अल्पवृद्धि धननाशक, और अपनी स्पष्टवादिता से स्वयं कार्य हानि कर लेता है। ❋❋❋

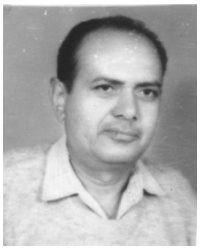

नयनों में क्या जी.....?

आचार्य डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा 'मयंक'
धीएस्ट्रोलॉलीकल ब्यूरो श्री जगदम्बा कॉलोनी ठाकुर बाबा रोड
डबरा-475110 जिला- ग्वालियर द्धम.प्र.ऋ
दू. भा. 07524-225472, मो. 09977522168

'चक्षोः सूर्यो अजायत' आँखों पर सूर्य का अधिकार है। सूर्य प्रकाश है तो आँखे भी प्रकाश हैं। मानव अंग लक्षणों को व्यक्त करने वाले 'समुद्रिक विज्ञान' में सर्वाधिक महत्व आँखों का है। आँखों की बनावट, रुप, रंग, आकार, प्रकार व्यक्ति के स्वभाव एवं उसकी प्रकृति तथा उसके सौभाग्य–दुर्भाग्य आदि को प्रकट करते हैं। रसों के अनुभाव आँखों से ही व्यक्त होते हैं।

किसी भी व्यक्ति के कार्य, व्यवहार, उसकी दशा, हाव–भाव आकर्षण–विकर्षण आदि से उत्पन्न मन में क्रोध, घृणा, दया, प्रेम, सहानुभूति, लज्जा, दुःख–सुख, स्वीकृति, अस्वीकृति आदि सर्वप्रथम आँखों में ही प्रतिविम्बित होते हैं। हिन्दी साहित्य में आँखों का अतिमनोंहारी वर्णन मिलता है। आँखों की अभिव्यक्ति अद्वितीय है। कवि 'पद्माकर' के एक कविता का यहाँ उल्लेख कर देना आवश्यक है जिसमें राधिका जी के सावण के तीज के दिन झूला–झूलते समय उनकी आँखों में क्या–क्या बसा है। का मनोहारी चित्रण है।

तीज पर तरनि तनूजा के तमाल तरे,
तीज की तैयारी ताकि आइ अँखियान में।
कहैं पद्माकर' सो उमगि उमंग उठी,
मेंहदी सुरंग की तरंग अँखियान में।।
प्रेम रंग बोरी गोरी नवल किशोरी भोरी,
झूलत हिंडोरे सो सुहाई अँखियान में।।
काम झूले उरमें उरोजन में दाम झूले,
स्याम झूलें प्यारी की अनियारी अँखियान में।।

इस संदर्भ में कबिविहारी का एक दोहा दृष्टव्य है।

कहत, नटत, रीझत, खिजत, मिलत, खिलत, लजियात
भरे भौन में करत है, नैनन ही सो बात।।

नेत्र लक्षण के कुछ योग प्रस्तुत हैं–

1. रक्तान्ते लोचने भद्रे तदन्तः कृष्णा तार के।
कम्बुगोक्षीर धवले कोमले कृष्णपक्ष्मणी।।

स्त्रियों के आँख का अग्र भाग लाल रंग और बीच की पुतली काली रंग की हो बाकी हिस्सा शंख के समान अथवा गाय के दूध के समान उज्जवल और कोमल हो तो कल्याण करने बाली होती है।

2. अल्पायु रुन्नताक्षी च वृताक्षी कुलष्टा भवेत्।
आजाक्षी के कराक्षी च कासरक्षी च दुर्भगा।।

ऊँचे नेत्र वाली स्त्री अल्पायु होती है, गोल नेत्र वाली चरित्र हीन होती है और बकरे की तरह नेत्र वाली, केकरे की तरह नेत्रवाली, भैस की तरह नेत्र वाली स्त्री दरिद्रा (अभागिनी) होती है।

3. पिग्ड़ाक्षी च कपोताक्षी दुःखीला कामवर्जिता।
कोटराक्षी महादुष्टा रक्ताक्षि पतिघातिनी।।

पीले नेत्रवाली या कबूतर के समान नेत्र वाली स्त्री दुष्ट स्वभाव की होती है और काम क्रीडा रहित होती है। गहरे नेत्र वाली महादुष्टा होती है और लाल नेत्रवाली स्त्री पति को जान से मारने वाली होती है।

4. बिडालाक्षी गजाक्षी च कामिनी कुलनाशिनी।
वन्ध्या च दक्षकाणाक्षी पुंश्चली वामकाणिका।।

जो कामिनी बिल्ली के समान आँख वाली हो अथवा हाथी के समान (अति छोटी) आँख वाली हो वह अपने (पति के) कुल को नाश कर डालती है। दाहिनी आँख काणी वाली स्त्री बन्ध्या और बायी आँख काणी वाली स्त्री चरित्रहीन होती है।

5. सदा धनवती नारी मधुपिंगल लोचना।
पुत्रपौत्र सुखोपेता गदिता पतिसंमता।।

जिस स्त्री के नेत्र शहद के सामन पीले हों वह सर्वदा धनी, धान्य, पुत्र–पौत्र से युक्त और पति की सेवा करने वाली होती है।

6. कोमलैरसिताभासैः पक्ष्मभिः सुघनैरपि।
लघुरुपधरैरेव धन्या मान्या पति प्रिया।।

जिस स्त्री के पलक के रोम कोमल, काले रंग के घने और छोटे–छोटे हों तो वह सुलोचना अपने कुल में श्रेष्ठ, आदरणीय और पति की प्यारी होती है।

7. रोमहीनैश्च बिरलैलीम्बितैः कपिलैरपि।
पक्ष्मभिः स्थूल केशैश्च कामिनी परगामिनी।।

जिस स्त्री के पलक में रोम न हो अथवा कहीं अधिक, कहीं कम रोम हों अथवा लंबे–लंबे रोम हों अथवा पलक के रोम मोटे–मोटे हों तो ऐसे पलक वाली कामिनी चरित्रहीनता होती है।

8. वर्तुला कोमला श्यामा भ्रूर्यदा धनुराकृतिः।
अनग्ड रग्ड जननी विज्ञेया मृदु लोमशाः।।

जिस स्त्री की भृकुटी भौंह गोलाकार, कोमल श्याम रंग धनुषाकार हों और भौंह के रोम कोमल हों तो वह शूभ्रू सुख शैय्या पर कामक्रीड़ा में अपने प्रिय बल्लभ को अति सुख देती है।

9. पिग्ड़ा विरला स्थूल सरला मिलिता यदि।
दीर्घलोमा विलोमा च न प्रशस्ता नत भ्रुवः।।

जिसकी भौंह पर पीले रंग के केशहों, कहीं अधिक कहीं कम केश हों, मौटे–मौटे केश हों, भौंह सीधी हों या दोनों भौंह मिली हुई हों या भौंह के रोम बड़े–बड़े हों अथवा बिन रोम के भृकुटी हों अथवा भौंह के केश नीचे लटके हों तो अशुभ फल देता है।

1. यदि व्यक्ति की आँखे शहद के समान पीली हो तो व्यक्ति श्रेष्ठ, सुखी एवं धनी मानी होता है। **2.** वे आँखे जो व्यक्ति की नाक की ओर ढालू हो अर्थात सीधी रेखा में न हों तो ऐसा व्यक्ति व्यवहार में झूठ, कपट एवं छल का सहारा लेता है। **3.** यदि दोनों आँखों में पर्याप्त दूरी हो तो व्यक्ति सत्यवादी एवं स्पष्ट वक्ता होता है। यदि यह दूरी अधिक हो तो व्यक्ति झूठ का सहारा लेने वाला होता है। **4.** गहरे नीले रंग की आँखों वाले व्यक्ति अस्थिर मत के होते हैं। ये विपरीत लिंगी के प्रति शीघ्र आकर्षित होते है अतः इनके चरित्रिक पतन की पूरी सम्भावना रहती है। **5.** यदि आँखे पैना पन लिये हों

शेष पेज 22 **पर**.....

ज्योतिष की नजर में रोग

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, वास्तु शास्त्राचार्या
टैरो कार्ड रीडर, मो.9319305530

'भारतीय ज्योतिष विज्ञान मनुष्य के सर्वागीण पक्षों को उद्घाटित करता हुआ उसके शुभ एवं अशुभ समय को सूचित करता है। किस ग्रह का किन–किन बीमारियों पर प्रभाव पड़ता है तथा किस समय उस रोग के होने की सम्भावना है, इसका पूरा विवरण भारतीय ज्योतिष में है।'

'मेडिकल एस्ट्रोलॉजी' फलित ज्योतिष की वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत विभिन्न रोग एवं उनके कारणों का ज्योतिष के आधार पर अध्ययन किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कभी न कभी रोगों से अवश्य पीड़ित होता है। कुछ व्यक्ति किसी विशेष समय में अथवा माह में ही प्रतिवर्ष बीमार हो जाते है। ये सभी तथ्य प्रायः जन्मपत्रिका में ग्रहों की भावगत एवं राशिगत स्थितियों और दशा–अन्तर्दशा पर निर्भर करते हैं। इसके अतिरिक्त कई बीमारियाँ ऐसी हैं जो होने पर बहुत कम दुष्प्रभाव डाल पाती है, जबकि कुछ बीमारियां ऐसी है, जो जब भी होती हैं तो नुकसान पहुँचाती हैं। कई बार ऐसी भी स्थिति उत्पन्न होती हैं कि बीमारी होती तो है लेकिन उसकी पहचान भली प्रकार से नहीं हो पाती है। इन सभी प्रकार के तथ्यों का पता जन्मपत्रिका को देखकर लगाया जा सकता हैं। प्रस्तुत लेख में रोग और रोगों का ज्योतिषीय सन्दर्भ में अध्ययन किया जा रहा है।

जन्मपत्रिका में लग्न भाव स्वयं का प्रतिनिधित्व करता है। यह एक प्रकार से सम्पूर्ण शरीर को दर्शाता है। षष्ठ भाव रोगों को दर्शाता हैं और अष्टम भाव आयु का प्रतीक है। इस प्रकार इन तीनों भावों का ही इस सम्बन्ध में प्रमुखता से विचार किया जाता हैं।

रोगों में शारीरिक एवं मानसिक दोनों ही प्रकार के रोग आते हैं। इसके अतिरिक्त दुर्घटना इत्यादि का सम्बन्ध भी रोग एवं पीड़ा से होता है। रोगादि एवं शारीरिक पीड़ा का प्रारम्भ जन्म से ही हो जाता हैं। कोई व्यक्ति किस प्रकार के रोगों से अधिक पीड़ित होगा, इसका निर्धारण सामान्यतः पीड़ादायक ग्रह के आधार पर किया जाता है। जो ग्रह पीड़ादायक होता है, वह अपनी प्रकृति के अनुसार रोग या पीड़ा प्रदान करता है। अब प्रश्न यह उठता है कि कोई ग्रह रोग प्रदायक बन रहा है अथवा नहीं, इसका निर्धारण कैसे किया जाये? इस सम्बन्ध में निम्नलिखित नियमों को विशेष रुप से देखना चाहिये।

शेष पेज 22 **पर**.....

वाणी ऐसी बोलिए

श्रीमती नूतन
ज्योतिष शास्त्राचार्य
मो. 9720695096

वाणी हमारे व्यवहार का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। वाणी हमारे व्यक्तित्व का आईना है। वाणी के द्वारा हम परायों को भी अपना बना लेते है और कभी–कभी कटु वाणी से अपने भी पराये हो जाते है इसी लिए मधुर व यथार्थ वाणी का उपयोग करना चाहिए। कटु वचनों का प्रयोग नहीं करना चाहिये।

आजकल हृदय की सरलता और वाणी की यथार्थता कहीं खोती जा रही है। वाणी का तेज नष्ट हो रहा है। कौन क्या और कैसी भाषा बोल रहा है। किससे बोल रहा है इसका कोई अर्थ ही नहीं रह गया है। कभी व्यापार तो कभी स्वार्थ वश हम वाणी की महत्ता को भूलते ही जा रहे है।

पुरातन काल में हमारे ऋषि मुनि जो कह देते थे वहीं सत्य हो जाता था क्योंकि उनकी वाणी में ओज था तथा वह इसका प्रयोग केवल आवश्यकता पड़ने पर ही करते थे। जिससे उसमें एक अलग ही प्रभाव उत्पन्न होता है। परन्तु आज के समय में हम लोग व्यर्थ की बातों में अपनी वाणी का तेज व समय दोनों नष्ट करते रहते है। हसीं–मजाक में झूठ व अभद्र शब्दों के प्रयोग की भरमार रहती है। ना उम्र का ध्यान बचा है ना भाषा का इससे वाणी का ओज तो खत्म हो ही रहा है। ना परमार्थ–साधन की शक्ति है इसी के चलते कोई भी किसी की बात पर विश्वास नहीं करता, कितना ही निकट संबंधी क्यूं ना हों एक–दूसरे पर अविश्वास बढ़ता ही जा रहा है क्योकि वाणी शब्दों का कोई महत्व ही बच गया है।

यदि हम ध्यान दें तो श्री मद्भगबद् गीता में हमें बोलने की बड़ी सुन्दर कला सिखलाती है।

''अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाक्यं तप उच्चते।।''

अर्थात्– जो (सुनने बाले के मन में) उद्वेग करने वाला न हो, प्रिय हो, हितकारी हो, यथार्थ हो तथा जो वेद– शास्त्रों के पाठन और मरमेश्वर के नाम जप का अभ्यासी हो, वह भाषण ही वाणी का तप कहलाता है।

भगवत गीता के इस श्लोक व निम्न लिखित सुझावों को अपने नित्य प्रतिदिन के व्यवहार में सम्मलित करें तो साकारत्मक प्रभाव अवश्य होगा।

शेष पेज 22 **पर**.....

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

ड्राइंगरूम करें फिट

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ
फोन. 9412257617, 8126732115

जब हम ड्राइंग रूम की बात करते हैं तो इसका अर्थ उस स्थान से होता है। जो हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करें। ड्रांइग रूम यानी स्वागत कक्ष वह स्थान है, जहाँ मेहमानों की आवभगत की जाती है। ड्रांइग रूम का वातावरण खुला तथा मैत्री पूर्ण होना अति आवश्यक है। ताकि आंगतुक का मन शांत तथा प्रसन्न रह सके। जब तक अतिथि का मन शांत तथा प्रसन्न नही होगा तब तक वार्तालाप में प्रेम की कमी ही रहेगी दोनो ही लोग केवल औपचारिकताएं ही निभाते रहेंगें। स्वागत कक्ष का प्रयोग प्रतिदिन करना चाहिये, कुछ लोंगों के यहाँ पर कभी–कभी ही स्वागत कक्ष का प्रयोग होता है स्वास्थ्य एंव धनदायक उत्तर दिशा बैठक के लिये सर्वोत्तम स्थान है। उत्तर दिशा का ग्रह बुध संचार, सामाजिक क्रियाकलापों मनोरंजन और अहिंसक अभिरूचियों को प्रदान करने वाला होता है।

चन्द्रमा मन को अधिपत्य करता है। चन्द्रमा सौम्य, संवेदनशील, सेवाभावी और तीव्रतम चलने वाला ग्रह है। उत्तर दिशा में ड्रांइग रूम होने से व्यक्ति मेहमानो का उदार भाव से स्वागत करने में तत्पर रहता है धन और आसाक्ति का स्वामी कुबेर उत्तर दिशा का स्वामी है। हमारा असली धन हमारे मित्र सगे संबंधी, सहकर्मी, व्यवसायिक संबंधी आदि है। बृहस्पति ग्रह का संबंध ज्ञान पढने लिखने और सत्वगुणों से है। यह उत्तर दिशा कर्क राशी में उच्च की हो जाती है। इस दिशा में स्थित बैठक को आराम से बैठक और पुस्तकालय दोनो के लिये मिश्रित रूप से प्रयोग किया जा सकता है।

वायव्य कोण में करें पार्टी :– पूर्व प्रेरण, ज्ञान–बोध और सूर्योदय की दिशा है, यदि आप प्रतिदिन नये लोगों से मिलते है। तो पूर्व दिशा में ड्रांइग रूम बनाना ज्यादा श्रेष्ठ होगा। पूर्व दिशा का ड्रांइग रूम सामाजिक कार्य कर्ताओं, राजनेतोओं और बड़े व्यापारियों के लिये उत्तम है। बैठक के लिये वायव्य और ईशान अन्य शुभ दिशाये है। वायव्य वायु तत्व की दिशा है। वायु तत्व राजसी ऊर्जा से भरा है। वायु की प्रकृति बैठक की कार्य प्रणाली से मेल खाती है। यदि आपकी बैठके और पार्टिया देर तक चलती है। तो बैठक के लिये वायव्य विशेषरूप से शुभ है। यहाँ बैठक होने पर मेहमान ज्यादा देर तक नही टिकते है। वायु की ऊर्जा उन्हें अधिक देर तक नहीं रूकने देती है। ईशान जल तत्व की दिशा है। ईशान शांत, सुखद स्थान है। यदि हद्रय से अतिथि को देवता तुल्य मानते हो तो स्वागत कक्ष के लिये ईशान कोण अति उत्तम है।

फर्श नीची न हो :– ड्राईंग रूम की फर्श आस पास की जमीन से नीची नही होनी चाहिये कहने का आशय यह है। कि अतिथि को ड्रांइग रूम में आते समय अपना कदम नीचे की और न रखना पड़े। कक्ष का मुख्य द्वारों की संख्या सम ही रखनी चाहिये। विषम दरवाजे होने से वातावरण में विषाक्तता और अंशाति रहती है। स्वागत कक्ष के मध्य से कोई रास्ता नही होना चाहिये। किसी से वार्तालाप करते समय बीच से गुजरना बहुत खराब होता है।

भारी फर्नीचर दक्षिण में रखें :–ड्राइंग रूम में उन वस्तुओं की संख्या कम होनी चाहिये जिनका प्रयोग न होता हो। गोलाकार कोनो वाला वर्गाकार व आयताकार फर्नीचर शुभ रहता है। भारी फर्नीचर को नैकृत्य, दक्षिण या पश्चिम दिशाओं में रखना चाहिये। केन्द्र में बहुत भारी वस्तुये नही रखनी चाहिये सोफा या कुर्सियों के एकदम पीछे कोई द्वार या खिड़की न हो तो अच्छा रहता है। पीठ की ओर ठोस दीवार होने से व्यक्ति सुरक्षित, तनावरहित और आत्मविश्वास से भरा रहता है। जहाँ तक हो सके परिवार के मुखिया को ड्राइंग रूम के मुख्य द्वार की ओर अपना मुख करके बैठना चाहिये। किताबों की अलमारी आदि अन्य भारी फर्नीचर रखने के लिये दक्षिण या पश्चिम को चुने। ***

साढेसाती एवं ढैया के दोष निवारण के लिये 'महिमामंडित पारद माला'

पं. दिलीप उपाध्याय
ज्योतिषरत्न
मो. नं. 9760452802

उच्चकोटि के तंत्र शास्त्रों में इसका उल्लेख मिलता है परन्तु इसकी पूर्ण व्याख्या किसी एक ग्रन्थ में नहीं है। यह श्रेष्ठतम माला योगेश्वर भगवान श्री कृष्ण व श्री राम के गले में निरन्तर विद्यमान रहती थी। योगीजन इस माला को सिद्ध कर अपनी उच्च क्षमता करते रहे हैं। सम्राट अशोक भी ज्ञान प्राप्ति के लिये महात्मा बुद्ध के पास अपना सब कुछ छोड़कर चले गये थे।

वास्तव में माला तो कुंडलिनी शक्ति का स्वरुप है। मूलाधार से आज्ञा चक्र तक में सभी विन्दू शुद्र माला से जुड़े होते है। और जिस प्रकार से अवरोही व आरोही क्रम ऊपर से नीचे व नीचे से ऊपर की ओर जुड़े होते है। इसी प्रकार कुण्डलनी शक्ति के बिन्दू जुडे होते है। इसी श्रेष्ठ माला में इन बिन्दूओं को जोड़ा जाता है। पारद माला का दूसरा नाम त्रैलोक्य विजय है। इसे त्रैलौक्य भुवन मोहिनी, त्रैलोक्य विजयनी, व त्रैलौक्य शक्ति प्रदायक के नाम से भी जाना जाता है। शास्त्रों में कहा है इस माला को धारण करने से 64 सिद्धियां और नवनिधियां स्वतः प्राप्त हो जाती है। जहाँ एक ओर संसार का समस्त वैभव, एश्वर्य, आनंद, व सुख पहनने वालों को प्राप्त होता है वहीं दूसरी ओर कई सिद्धियां उसे स्वतः प्राप्त होने लगती है। इस माला को **"त्रैलोक्य पारद माला"** भी कहा गया है।

इसके धारण करने से दरिद्रता का नाश होता है व आकस्मिक धन लाभ होने की संभावना बढ़ती है। शरीर के असाध्य रोग भी धीरे–धीरे स्वतः ही कम होने लगते है व आँखों की रोशनी बढ़ती है व वह व्यक्ति स्वस्थ्य व सौदर्यशाली होता जाता है। दिमाक तेज होता है व व्यापार व राज्य कार्यो में विशेष सफलता प्राप्त होती है। इसके धारण करने से उसमें अत्यधिक जोश, हिम्मत व आत्मविश्वास की भावना बढ़ जाती है। सबसे बड़ी बात यह है कि जिस घर पर शनि की दृष्टि होती है वह पति–पत्नी में झगड़ा, व्यापार व नौकरी में विघ्न–बाधा समस्त बाधाओं को दूर कर उस व्यक्ति के धीरे–धीरे सभी कार्य बनने लग जाते है। जिसकी नजर इस माला पर पड़ती है वह उसके अनुकूल होकर कार्य करने लग जाते है। व झगड़े धीरे–धीरे शान्त हो जाते है। आवश्यकता इस बात की है कि माला को सिद्ध करवा कर नियमित पहने रहे व निम्न मंत्र का निरन्तर जाप करते रहे–

''ऊँ नमोः भगवते शनैश्चराय सूर्य पुत्राय नमः''

वर्तमान में भी बहुतों ने इसका लाभ उठाया तथा कई लोगों को आंशिक लाभ का दर्शन हुआ है। ऋषि–महर्षियों की इस वाणी में आखिर कितनी सत्यता है? प्रयोग कर लाभ उठायें। ***

वास्तु बताये धन की दिशा

श्रीमती रेनू कपूर
वास्तु ऋषि
9219413439, 9837755255
E-mail.vastumandiram@rediffmail.com

प्रायः सभी व्यक्ति अत्यन्त कठोर परिश्रम से कमाये धन को सुरक्षित रखने के साथ–साथ धन में वृद्धि हो ऐसी कामना भी करता है रुपये पैसे वे कीमती आभूषण कागजात आदि को सुरक्षित रखने के लिये सभी अलमारी अथवा तिजोरी आदि का प्रयोग करते है धन को सुरक्षित रखने व धन वृद्धि से सम्बन्धित जानकारी वास्तुशास्त्र में बताई गई है कि भवन की किस दिशा में धन का स्थान बनाने से लाभ हो सकता है और किस दिशा में धन रखने से हानि हो सकती है। रुपया पैसा रखने का सभी स्थान जिससे बन जाये व्यक्ति धनवान ऐसी कुछ आवश्यक जानकारी जो वास्तुअनुसार बताई गई है–

उत्तर दिशा में कीमती आभूषण रुपया, पैसा आदि रखा अत्यन्त शुभ माना जाता है इसलिये उत्तर दिशा के कमरे में दक्षिण दीवार से सटाकर अलमारी रखनी चाहिये इस दिशा का स्वामी धनअध्यक्ष कुबेर देवता है उत्तर दिशा की ओर खुली अलमारी में रखे धन सम्पत्ति आदि में निरन्तर वृद्धि होती रहेगी और धन भी सुरक्षित रहेगा।

उत्तर पूर्व दिशा अर्थात ईशान कोण में धन सम्पत्ति आभूषण, मूल्यवान वस्तुऐं रखना भवन के मुखिया के बुद्धिमान होने का प्रतीक है यह दिशा व्यक्ति धन के सदुपयोग के साथ मान सम्मान प्राप्त कराती है।

पूर्व दिशा में सम्पत्ति, रुपया, पैसा आदि तिजोरी में रखना धन वृद्धि में सहायक होता है पूर्व दिशा को सूर्य की दिशा कहा जाता है।

पूर्व दक्षिण दिशा अर्थात आग्नेय कोण इस दिशा में रखे धन में वृद्धि बहुत कम होती है भवन के मुखिया की आय घर के खर्च से कम होने के कारण कर्ज जैसी स्थिति बनी रहती है।

दक्षिण दिशा में सोना चाँदी कीमती आभूषण रखने में कोई हानि नहीं है लेकिन धन वृद्धि विशेष नहीं होती। वायव्य दिशा में यदि धन रखा जाये तो आय की तुलना में खर्चे अधिक होते हैं ऐसे व्यक्ति का बजट निरन्तर निश्चित नहीं होता उस पर कर्ज का बोझ बना रहता है।

पश्चिम दिशा में धन सम्पत्ति आभूषण आदि रखे जाये तो व्यक्ति को थोड़ा लाभ तो अवश्य मिलता है घर का मुखिया अपने मित्रों के सहयोग के बावजूद भी बड़े संघर्ष के साथ धन लाभ प्राप्त कर पाता है।

दक्षिण पश्चिम अर्थात नैऋत्य कोण की दिशामें रखा हुआ धन बहुमूल्य सामान, आभूषण इत्यादि बस्तुऐं अधिक समय तक धन व स्वास्थ्य लाभ तभी तक प्राप्त कराती है जब ईमानदारी से धन कमायें।

धन रखने के स्थान को अथवा तिजोरी को सीढ़ियों के नीचे रखना शुभ नहीं होता स्नानघर अथवा शौचालय से सटी हुयी अलमारी में धन तथा कीमती सामान नहीं रखना चाहिये।

तिजोरी अथवा अलमारी वाले कमरे में नकारात्मक ऊर्जा पैदा करने वाला अनावश्यक सामान न रखें जिससे परिवार खुशहाल और धन सम्पन्न रहें। धन की हानि ना हो।

भवन में तिजोरी के पल्ले पर बैठी हुई लक्ष्मी जी की तस्वीर जिससे सूँड़ उठाये दो हाथियों का भी चित्त हो लगाना अत्यन्त शुभ होता है।

किसी कारणवश धन सम्पत्ति को उत्तर दिशा में ना रख सके तो धन सम्पत्ति व कीमती सामान की तिजोरी अथवा अलमारी भवन की किसी भी दिशा में दक्षिणी दीवार से सटाकर इस प्रकार रखें कि वह कुबेर की दिशा उत्तर दिशा ओर खुलें और भवन में रहने वाले परिवार को व्यापार में प्रगति, परिवार में सोहार्द सुख सुविधाऐं हमेशा बनी रहें। ❋❋❋

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

16 जून - 15 जुलाई

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–इस मास में मानसिक तनाव अधिक रहेगा। फालतू विवादों से परेशान रहेगें। पत्नि से मनमुटाव होने की संभावना रहेगी। धन हानि होने की सभांवना रहेगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में वायु विकार जैसे रोग से ग्रस्त होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। मास के अन्त में धन हानि होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय मे रूकावटें आयेगीं। आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा। मास के अन्त में आर्थिक हानि की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में हानि होना भी संभव हैं। मानसिक तनाव अधिक रहेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल रहेंगे। सम्पत्ति को लेकर विवाद होगें। व्यवसाय ठीक चलेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास मे क्रोध शक्ति मे वृद्धि होगी। प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति बनने की संभावना रहेगी। धन लाभ होना भी संभव हैं। व्यर्थ के खर्चे बढ़ जायेंगे। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–इस मास में आपको हानि होने का भय रहेगा। रोग होने का भय रहेगा। पत्नि को शरीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। फालतू के विवादो से बचें।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में आपको हानि होने का भय रहेगा। रोग होने का भय रहेगा। पत्नि को शरीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। फालतू के विवादो से बचें।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में आपका स्वास्थ्य मधयम रहेगा। लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा। नेत्र कष्ट रहेगा। मास के अन्त में हानि होने का भय रहेगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में शारीरिक कष्ट होने की सभांवना रहेगी। प्रियजनों से अनबन होने की संभावना रहेगी। नेत्र कष्ट होने की संभावना रहेगी। धन की हानि होना भी संभव हैं। प्रियजनों से अनबन होने की संभावना रहेगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस माह में शरीरिक पीड़ा रहेगी। कारोबार मे हानि होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव की स्थिति बनेगी। मित्रों से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। शत्रु प्रबल होगें।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास में स्थान परिवर्तन होने की सभांवना रहेगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। आर्थिक लाभ का सुख प्राप्ति होगा। सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- व्यवसाय मे रूकावटें आयेंगी। कार्य में हानि होने की सभांवना रहेगी। आय से ज्यादा व्यय करेगें। शत्रु पक्ष प्रबल होगा। सम्पत्ति का लाभ होगा। मित्रों से अनबन होने की स्थिति बनेगी। पत्नि सुख की प्राप्ति होगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

जून	जुलाई
16 प्रदोष व्रत	**1** प्रदोष व्रत **3** गुरु पूर्णिमा
19 अमावस्या (स्नान/दान)	(मुड़िया पुनो), पार्थिव पूजन प्रा.
21 रथयात्रा जगन्नाथपुरी	**6** श्री गणेश चतुर्थी व्रत
23 श्री विनायक चतुर्थी व्रत	**8** नाग पंचमी (बंगाल)
24 स्कन्ध पंचमी **25** कुमार	**9** षष्ठी, श्रावण सोमवार व्रत
षष्ठी **26** सूर्य सप्तमी	**10** शीतला सप्तमी, मंगलागौरी
27 दुर्गाष्टमी **28** भण्डली	व्रत **11** कालाष्टमी, वि. जनसंख्या
नवमी **30** देवशयनी एका व्रत	दि. **14** कामदा एकादशी व्रत

ग्रहारम्भ मुहूर्त
जून–नही है।
जुलाई– नही है।
गृह प्रवेश मुहूत
जून– नही है।
जुलाई– नही है।
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
जून – 22, 27 जुलाई– 1
नामकरण संस्कार मुहूर्त
जून–15, 22 जुलाई– 5, 6

सर्वार्थ सिद्ध योग

जून	जुलाई
26 ता. सू.उ से 17:04 तक	03 ता. सू.उ. से 21:44 तक
28 ता. सू.उ. से 21:09 तक	11 ता. 10:43 से सू.उ. तक
29 ता. सू.उ. से सू.उ. तक	

16 जुलाई - 15 अगस्त

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। संबध में या रिस्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानियां भी लगी रहेंगी। शत्रु पक्ष आप पर हावी रहेंगें। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– आपको यात्रा में शारीरिक एवं आर्थिक कष्ट होना भी सभंव हैं। ध न हानि होने की संभावना रहेगी। कारोबार या व्यवसाय में रूकावटें आयेंगी। आपको प्रियजनों का सुख एवं साथ मिलेगा। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में सन्तान को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। इस माह में पित्तविकार रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी। नेत्र कष्ट जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। कारोबार, व्यवसाय ठीक चलेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस माह में आपको राज्यभय रहेगा। आपकी आय का स्रोत्र अच्छा रहेगा परन्तु व्यय आय के अनुपात में ज्यादा होगा। इस माह में आपका शारीरिक स्वास्थ्य खराब रहने की संभावना रहेगी। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि आयेगी।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में आपको मानसिक तनाव अधिक रहेगा। शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। घरेलु अच्छे एवं गुण वाले लोगों से मेल सूत्र बढ़ेगा। आपको अपनी पत्नि से लाभ प्राप्त होगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– प्रियजनों में से किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा स्थान परिवर्तन होने की संभावना रहेगी। आपको पत्नि का सहयोग एवं पूर्ण सुख मिलेगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– घरेलू परेशानियों की वृद्धि होगी। अपने कार्य से आपको लाभ की प्राप्ति होगी। आपके प्रियजनों या रिस्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। इस मास में आपको राज भय रहेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस माह मे धनहानि होने की संभावना रहेगी। नई-नई योजानओं से लाभ की प्राप्ति होगी। आपको सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी। वृथाविवाद से दूर रहें।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। सन्तान पक्ष से चिन्ताऐं बनी रहेगी। सम्पत्ति से लाभ प्राप्त होगा। आपको अपने कार्य से लाभ की प्राप्ति होगी। कारोंबार या व्यवसाय व नौकरी में भी कुछ रूकावटें उत्पन्न होंगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। अपने प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। आपके समय के अनुसार काम होते रहेंगे। शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। यात्रा का सुख प्राप्त होगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास मे स्वास्थ्य ठीक-ठीक रहेगा। रक्त-पित्त जैसे रोगों से आप ग्रस्त रहेंगे। आपको अपनो का सहयोग मिलेगा। मानसिक तनाव अधि क रहेगा। क्रोध में निरन्तर वृद्धि होगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। आपकी आय का स्रोत्र अच्छा रहेगा परन्तु व्यय आय के अनुपात में ज्यादा होगा। धन हानि होने की संभावना रहेगी। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

जुलाई	अगस्त
16 प्रदोष व्रत, श्रावण सोमवार व्रत **17** मंगला गौरी व्रत **19** हरियाली अमावस्या **22** हरियाली तीज, श्री गणेश चतुर्थी व्रत **23** बाल गंगाधर तिलक जं. श्रावण सोमवार व्रत **24** श्री नाग पंचमी, मंगला गौरी व्रत **25** गोस्वामी तुलसी दास जं. **26** दुर्गाष्टमी **29** पुत्रदा एका. व्रत **30** श्रावण सोमवार व्रत, प्रदोष व्रत **31** मंगला गौरी व्रत	**1** चतुर्दशी व्रत **2** पूर्णिमा व्रत, रक्षाबन्धन **5** कंजली तृतीया, श्री गणेश चतुर्थी व्रत **7** श्री वीन्द्रनाथ टैगोर पु. दि. **8** षष्ठी हलष्ठी **9** शीतला सप्तमी, क्रांति दिवस **10** श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत **11** गोगा नवमी **13** अजा एका. व्रत **14** गौवत्स द्वादशी **15** भा. स्वतंत्रता दिवस, प्रदोष व्रत

ग्रहारम्भ मुहूर्त
जुलाई – 25 अगस्त – नही है।
गृह प्रवेश मुहूर्त
जुलाई – 25
अगस्त – नही है।
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
जुलाई – 25, 30
अगस्त – नही है।
नामकरण संस्कार मुहूर्त
जुलाई – 18, 31
अगस्त – 3

सर्वार्थ सिद्ध योग

जुलाई	अगस्त
16 ता. 9:26 से सू.उ. तक	03 ता. 22:10 से सू.उ. तक
26 ता. सू.उ. से सू.उ. तक	08 ता. सू.उ. से 15:36 तक
27 ता. सू.उ. से सू.उ. तक	12 ता. 16:50 से सू.उ. तक
31 ता. सू.उ. से सू.उ. तक	13 ता. सू.उ. से 18:05 तक

'लोभी नाई'

मामा की कलम से.....

श्री विजय शर्मा
मो. 9412263505

उसकी नायन ने जब उसका यह तमाशा देखा तो उसने इसका कारण पूछा–"आप किवाड के पीछे किसलिए पूरे दिन भूखे–प्यासे खड़े रहे थे?"

उसने अपनी पत्नी को कुछ नहीं बताया। कहने लगा, "मैं कल भी इसी प्रकार किवाड़ के पीछे छुपकर खडा होऊंगा, यदि मुझे कोई पूछने आए या कोई ग्राहक बाल बनवाने वाला आये तो उससे मना कर दिना कि मैं घर में नहीं हूं।"

नायन ने उसकी बात सुनी और अगले दिन वैसा ही किया।

सुबह सवेरे नाई फिर अपने हाथ में डण्डा लेकर किवाड के पीछे छुपकर खड़ा हो गया।

दुर्भाग्य से उस दिन भी कोई भिखारी उसके द्वार पर भीख मांगने नहीं आया, तो नाई को बहुत क्रोध आया। वह अपनी किस्मत को कोसने लगा– "धत्त तेरे की.... कैसी किस्मत है कि कोई भिखारी हमारे द्वार पर नहीं आया। दो दिन हो गये, मैं भिखारी की इन्तजार ही करता रहा। या तो रोज–रोज कई–कई भिखारी भीख मांगे आ जाया करते थे और जब से मुझे उनकी जरुरत पड़ी है, कोई आया ही नहीं।

यह बात उसकी पत्नी सुन रही थी। उसने नाई से पूछा–"पतिदेव! आपको भिखारी की क्या आवश्यकता आन पड़ी–जोकि आज दो दिन हो गये आप भिखारी के लिए ही छुपकर खड़े होते हैं? आपको भिखारी की आवश्यकता है और घर में भीख देने के लिए तो कुछ भी नहीं हैं।"

नाई ने पत्नी की बात सुनी तो कल से भी अधिक उसे क्रोध आया और वह अपनी पत्नी पर लाल–पीला होना शुरु हो गया– किसी ने सच कहा है–"कुम्हार पे वश न चला तो गधी के कान ऐंठने शुरु कर दिये।" नाई ने ऐसा ही किया था।

भिखारी तो न जाने किस कारण नहीं आ रहे थे या यूं कहिए कि शायद उसी का भाग्य था जोकि भिखारी नहीं आ रहे थे।

"खैर, कोई बात नहीं। नाई गुर्राया, और अगले दिन फिर डण्डा हाथ में लेकर भूखा–प्यासा अपने किवाड़ के पीछे रोज की भांति छुप गया–"कभी तो आएगा–मैं भी चूड़ामणि की तरह तुझे मार–मार कर कलश में न बदल दूं तो मेरा नाम भी 'पलटु' नहीं।" वह अब भी गुर्रा रहा था।

कुछ देर बाद भाग्य का मारा एक भिखारी पलटु के द्वार पर आ ही गया। उसने भिक्षा, मांगी, तो नाई पलटु ने उसकी प्रतीक्षा कि जब भिखारी उसके घर के आंगन में पहुंच जाएगा तो वह उस पर लठ बजाएगा और कलश प्राप्त करेगा–वह सोच रहा था कि आज तो मेरी किस्मत जाग ही जाएगी, परन्तु भिखारी जब काफी देर तक उसके घर के आंगन में नहीं पहुंचा तो उसने स्वयं किवाड़ के पीछे से निकल कर भिखारी को अन्दर आने के लिए कहा।

बेचारा भिखारी स्वामी के आग्रह करने पर अन्दर चला गया। नाई ने उसे अपने घर में ले जाकर उसी डण्डे से उस भिखारी की मरम्मत शुरु कर दी।

भिखारी चिल्ला रहा था–"भाई! पहले मेरी बात तो सुनो... क्या किया है मैंने... क्यों मार रहे हो मुझे?

"तूने मुझे कई दिन से बड़ा परेशान कर रखा था...आज आया है तू..... अब मैं बताऊंगा ....तूने ही मुझे गरीब बना रखा है। आज मैं अमीर बनने वाला हूं।"

नाई भिखारी को पीट रहा था और कहता जा रहा था–"मेरा नाम पलटु है... आज मैं तुझे पलटकर रख दूंगा।" पिटते–पिटते भिखारी बेहोश हो गया था।

नाई उसे बेहोशी में भी पीटता जा रहा था। उसकी पत्नी ने नाई से पूछा–"अजी, इसे क्यों पीट रहे हो? यह तो भिखारी है। अपने बच्चों का भीख मांगकर पेट पालता है, यह मर जाएगा तो आपको पुलिस पकड़कर ले जाएगी... हम आपके बाद क्या करेंगे? हमारा तो इस संसार में जो कुछ है वह सब आपके दम के साथ हैं।"

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

नाई ने अपनी बीबी की एक न सुनी.....वह कहने लगा, "तू पीछे हट, नहीं तो इसके साथ तुझे भी मार दूंगा....तूने भी मेरी जिन्दगी में जहर घोल रखा है।" वह अपनी पत्नी की तरफ भी डण्डा लेकर दौड़ा। वह भागकर एक कमरे में घुस गयी और अपनी जान बचा ली।

नाई पलटु ने उस भिखारी को इतना पीटा कि उसकी जान निकल गयी थी, परन्तु जिस मतलब के लिए उसने उस भिखारी को पीटा और उसकी जान ले ली थी। वह चाहता था कि जो कुछ वह चूड़ामणि को करते देख आया था वह भी ऐसा ही करे और भिखारी को मौत के घाट उतारकर स्वयं भी उसकी तरह मणि–रत्नों का कलश प्रलश प्राप्त करे और धनवान बन जाये, परन्तु किसी ने ठीक ही कहा हैं, "जो कुछ किसी ने पुण्य से प्राप्त किया है वह सब मुझे भी मिल जाए।" यह लोभ मनुष्य को दुःखी करता है। यदि हो रहा था नाई पलटु के साथ। भिखारी घर में मरा पड़ा था। तभी किसी ने पुलिस को खबर कर दी। पुलिस नाई पलटु को पकड़कर अदालत के सम्मुख पेश किया।

राजा की अदालत में पहुंचकर नाई की आंखे तक खुलीं जब राजा ने उसे मृत्यु दण्ड की सजा सुनाई। नाई रो रहा था और कह रहा था–"महाराज! मेरी कोई गलती मैंने चूड़ामणि की नकल की थी– उसने भी पांच दिन पहले एक भिखारी को मौत के घाट उतार दिया था और उसे उसके बदले मणि–रत्नों से भरा एक स्वर्ण–कलश प्राप्त हुआ था।"

"तो तू भी वही कलश प्राप्त करना चाहता था, अरे मूर्ख! यह उसके पुण्य का बदला था। तूने क्या पुण्य किया? अब तो तू भी मृत्यु को प्राप्त होगा।" और उसे फांसी दे दी गयी।

कथा सुनाकर चकवा बोला, "इसलिए मैं कहता हूं कि दूसरे ने पाया, मुझे भी मिल जाए–यह सोचकर दुःखी होना मूर्खता है।"

"कह तो तुम ठीक रहे हो, किन्तु यह कैसे माना जाए कि आगन्तुक विश्वसनीय है या विश्वासघाती? चलो छोड़ो, पहले ये विचार करो कि मलय पर्वत पर हमारा शत्रु डेरा डाले बैठा है, अब क्या करना चाहिए?" राजा बोला।

मन्त्री ने कहा, "महराज! हमारे गुप्तचर जोकि अभी लौटकर वापस आये हैं, मैंने उनके मुख से सुना है कि शुत्र राजा ने अपने गिद्ध मन्त्री के उपदेश पर ध्यान न देकर उसका अपमान किया है, ऐसे मूर्ख राजा को जीता जा सकता है।"

किसी ने सही कहा है, "लोभी, कपटी, आलसी, झूठा, कायर, अधीर, मूर्ख और योद्धाओं का अपमान करने वाले शत्रु को आसानी से नष्ट किया जा सकता है।"

उसकी सेना जब तक हमारी घेराबन्दी करे, उससे पहले ही नदियों, पहाड़ों जंगलों और बीहड़ रास्तों में उसकी सेना को नष्ट करने के लिए सारस आदि सेनापतियों को नियुक्त कर दीजिए।

युद्ध–नीति भी कहती है कि लम्बे मार्ग से थकी हुई, नदी, पर्वत और वन के कारण थकी हुई, भयंकर अग्नि से भयभीत, भूख–प्यास से व्याकुल, भोज से आसक्त, रोग अकाल से पीड़ित, आश्रय रहित, थोड़ी–सी वर्षा व शीतल वायु से घबराती हुई कीचड़, धूल और जल से लिथेड़े हुए परेशान शत्रु की सेना को नष्ट कर देना चाहिए।

राजा को चाहिए कि शत्रु सेना पर सूर्योदय से पूर्व ही हमला बोल दें, क्योंकि युद्ध के डर से शत्रु सेना रात भर जागने से बुरी तरह शिथिल पड़ती होती है। इसी तरह दिन में रही और नींद से अलसाई शत्रु–सेना का नाश कर देना चाहिए। कहने का अर्थ है कि ऐसी प्रमादी सेना को जैसे अवसर मिले उसी अनुसार रात–दिन मारना चाहिए।

राजा ने चित्रवर्ण की सेना पर तुरन्त हमला कर दिया।

रणनीति वहीं अपनायी गयी जो चकवे ने राजा को बतायी थी। मन्त्री चकवे के बताए अनुसार युद्ध करने पर चित्रवण की सेना बहुत–से सैनिक और सेनापित मारे गये।

ऐसी स्थिति में चित्रवर्ण ने अपने मन्त्री दूरदर्शी से दुःखी होकर कहा, "श्रीमान! यह कैसे हो रहा है? क्या मुझसे कोई धृष्टता हुई? मुझे शास्त्र की बात ध्यान आ रही है। राजा को यह सोचकर मनमानी नहीं करनी चाहिए कि मैं राजा बन गया हूं।"

ऐसे मनमानी करने वाले राजा को लक्ष्मी इस तरह तबाह कर देती है जिस तरह सौन्दर्य को बुढ़ापा।

"वैसे भी चतुर पुरुष लक्ष्मी को, हल्का भोजन करने वाला नीरोगता को, रोगहीन सुख को, अभ्यासी विद्या के अन्त को और नम्र व्यक्ति धर्म, धन व यश को पाता है।"

राजा की बात सुनकर दूरदर्शी गिद्ध सोचने लगा–"जब राजा को अक्ल आ रही है, जब बहुत–से सेनापति मारे गये। यदि वह युद्धसे पहले ही मेरी बात मान लेता तो आज इसे यह दिन देखने को न मिलता।"

परन्तु क्योंकि युद्ध लपटें गिद्ध को भी अपनी चपेट में ले सकती थी, इसलिए उसने अब यह सब बात करने का समय न सोचकर राजा को परामर्श दिया–"महाराज! राजा भले ही नीतिज्ञ न हो, पर विद्वान सेवक के प्रताप से उसी प्रकार धनी हो जाता है जैसे नदी–तट का वृक्ष फूलता–फलता है।

आपने किसी प्रकार की धृष्टता नहीं की है। धृष्ट राजा को स्त्रीगमन, मद्यपान, जुआ व शिकार खेलना, कुकृत्यों से धन बटोरना, बोलचाल रुखी और दण्ड देने में निर्दयी होता है।

वैसे भी बुराई–भलाई का विचार किए बिना मात्र साहस और उपाय करने से अधिक ऐश्वर्य नहीं मिलता, क्योंकि जहां नीति और शूरता रहती है, वहीं समस्त सम्पत्तियां रहती है।

आपने मात्र अपनी सेना और उसके उत्साह को देखकर युद्ध कर दिया। मैंने जो नीतिपूर्ण सलाह दी थी उसे आपने ठुकरा दिया और कठोर वचन कहे।हमें उस कटु नीति का फल भोगना पड़ रहा है।

महाराज! नीति के दोष किसमें नहीं होते, अहितकर भोजन खाने पर किसको रोग नहीं होता? लक्ष्मी किस मनुष्य में अभिमान नहीं लाती? मृत्यु किस को नहीं मारती और स्त्री का दुराचार किस पुरुष को नहीं सताता?

वैसे भी दुःख हर्ष को, हेमन्त ऋतु सर्दी को, सूर्य अन्धकार को, कृतघ्नता पुण्य को, इष्ट–प्राप्ति शोक को, नीति आपत्ति को और अनीति सम्पत्ति को नष्ट कर देती है।

महाराज! इसी से मैंने सोच लिया था– राजा बुद्धिहीन है, नहीं तो कैसे नीतिशास्त्र की चांदनी को झूठ–मूठ की बातों से ढांपता। जिसके पास बुद्धि हीं होती उसकी शास्त्र भी कोई सहायता नहीं करता। अन्धे के लिए दर्पण का क्या लाभ!" इस प्रकार खरी–खरी बातें कहकर गिद्ध चुप हो गया।

तब राजा चित्रवर्ण हाथ जोड़कर बोला–"तात! मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूं, अब कोई ऐसा उपाय बताओं जिससे मैं शेष सेना सहित सकुशल विंध्याचल पहुंच जाऊं।"

राजा चित्रवर्ण इतना घबरा चुका था कि उसकी आंख में आंसुओ की धारा साफ चमक रही थी, वह इस समय कुछ भी करने को तैयार था। गिद्ध महाराज ने अपने राजा की दशा देखकर अपनी आयु का सारा तजुर्बा राजा के सामने पेश करने की ठानी और उसे उपाय बताकर उसकी, अपनी तथा सेना की जान बचाने की युक्ति सोची–गिद्ध मन ही मन कह रहा था–"देवता, गुरु, गाय, राजा, ब्राह्मण, बालक, बूढ़ा और रोगियों पर क्रोध नहीं करना चाहिए।

यह सोचकर मन्त्री गिद्ध बोला, "महाराज! डरिये मत। धीरज रखिए और मेरी बात सुनिए। मन्त्रियों की महिमा का मोल तो तभी आंका जाता है, जब फूट पड़ने परमेल–मिलाप करने की जरुरत पड़ती है। रोग में वैद्य की बुद्धि और कार्य की सिद्धि में दूसरों की बुद्धि जानी जाती है, पर समझदार बड़ा कार्य करके भी धीरज से कार्य करते रहते हैं। आप चिन्ता न करें, मैं इस मुसीबत से भी आपके प्रताप से शत्रु की किलेबन्दी तोड़कर यश और पराक्रम सहित थोड़े समय में ही आपको विन्ध्याचल ले चलूंगा।"

राजा की घबराहट गिद्ध की बात सुनकर कुछ कम होनी शुरु हुई, वह गिद्ध की बातें सुन रहा था और उसके मुख को तकता जा रहा था। राजा को विश्वास नहीं हो रहा था। कि अब हम अपने पैरों से बिन्ध्याचल जा सकेंगे, परन्तु गिद्ध के इस प्रकार के साहस बंधाने पर उसका हौसला बंधा और राजा ने अपने दूरदर्शी मन्त्री की प्रत्येक सलाह को मानने का वादा किया।

राजा चित्रवर्ण बोला, "इतनी थोड़ी–सी सेना से यह कैसे सम्भव हो सकेगा?"

"सब हो जाएगा।" गिद्ध ने पुनः राजा का साहस बंधाने की कोशिश करते हुए कहा, "महाराज! विजय की इच्छा करने वाले को मनचाहा फल पाने के लिए तुरन्त कदम उठाना चाहिए। आपको तुरन्त शत्रु के किले की घेराबन्दी कर देनी चाहिए।"

उधर प्रधान गुप्तचर ने राजा हिरण्यगर्भ को सूचना दी–"महाराज! राजा चित्रवर्ण थोड़ी सेना रह जाने पर भी मन्त्री गिद्ध की सलाह पर हमारे किले की घेराबन्दी करेगा।" ❋❋❋

शेष पेज 08 से आगे.....

अत्यधिक भागदौड़, मानसिक अशांति वायुविकार लीवर सम्बन्धी समस्याऐं परेशान कर सकती है। कठोर वाणी से बचे अनावश्यक खर्चो पर प्रतिबन्ध लगाऐं। व्यवहार कुशलता से सम्बन्धों में प्रगाढता आऐगी। अचानक धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। बृहस्पति मंत्रों का जाप व दान से लाभ मिलेगा। कलाई में पीला धागा बाँधे।

वृश्चिक राशि से सप्तमस्थ बृहस्पति पति–पत्नी के सम्बन्धों में कटुता आऐगी। पाटनर से सम्बन्ध विच्छेद भी हो सकते है। सतर्क रहें। मित्रों व भाइयों से सम्बन्धों में मधुरता आऐगी। पराक्रम व पुरुषार्थ का फल मिलेगा। आर्थिक व व्यावसायिक मामलों में कामयाबी मिलेगी। व्यावसायिक यात्राऐं लाभकारी सिद्ध होगी। विद्यार्थी वर्ग को विशेष लाभ नहीं मिलेगा। कर्मठ बने व कार्यशैली में परिवर्तन करने से थोडे से प्रयासों से सफलता मिलेगी। केले वृक्ष की जड़ या पुखराज धारण करने से लाभ मिलेगा।

धनु राशि स्वामी बृहस्पति षष्ठ भाव में स्वास्थ्य सम्बन्धी दिक्कते पैदा करेगा। विशेष तौर से पेट सम्बन्धी परेशानी रहेगी। छोटी–मोटी शल्य चिकित्सा भी सम्भव है। नये व्यवसायिक अनुबंध प्राप्त होगे कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। पारिवारिक विवादों में कमी आऐगी। लाभ–खर्च का संयोग बना रहेगा। घर–परिवार में विवाह जैसे मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। इच्छित पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। परंतु शत्रुओं से सावधान रहें। पुखराज रत्न लॉकेट, यंत्र व मंत्र पूजा से लाभ मिलेगा।

मकर राशि से पंचम स्थान पर गुरु का गोचर शुभ मंगलकारी होगा। प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के साथ–साथ भाग्य पक्ष भी मजबूत होगा। पूर्व नियोजित कार्यो में सफलता मिलेगी। पदोन्नित व स्थानान्तरण के अवसर प्राप्त होंगे। यात्राऐं लाभकारी सिद्ध होगी। नये ऑफर व पूँजी निवेश के लिये समय उचित है। स्वास्थ्य का ध्यान रखे, कार्यक्षमता प्रभावित होगी। विद्यार्थीवर्ग में एकाग्रता की कमी आऐगी। विषय चयन करते समय उचित सलाह लें। संतान पक्ष के निर्णय लेते समय धैर्य व संयम से काम लें। बृहस्पति के मंत्रों का जाप व किसी वृद्ध बाह्मण को दान देने से लाभ होगा।

कुंभ राशि से चतुर्थ गुरु का भ्रमण कार्यक्षेत्र में प्रगति व उन्नित देने वाला होगा। नये व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होगे। शुभ व मांगलिक कार्यो में बढ़ चढ़कर खर्चे करेंगे। पदोन्निति के अवसर प्राप्त होंगे। सहकर्मियों से विवाद सम्भव है। माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचे अन्यथा धन हानि सम्भव है। प्रापर्टी के क्रय–विक्रय में सर्तकता बरतें। व्यर्थ के भागदौड से बचें। स्थान परिवर्तन करना पड़ सकता है। पुखराज रत्न धारण करने के साथ–साथ, गुरुवार का व्रत व पीली वस्तुओं का दान देना हितकर होगा।

मीन राशि से तीसरे भाव में गुरु का गोचर भाई–बहिनों मित्रों में वैचारिक मतभेद व कटुता पैदा करेगा। पति–पत्नी के रिश्तों में मधुरता आऐगी। विवाह सम्बन्धी अडचनें दूर होगी। आकस्मिक धन लाभ व व्यापार में विस्तार सम्भव है। दूसरों की बातों के बहकावें में न आऐं। भाग्यपक्ष प्रबल होगा। रुके हुऐ कार्य पूर्ण होंगे। इच्छित फल की प्राप्ति होगी। जीवन साथी से पूर्ण सहयोग मिलेगा। लम्बी यात्राएं आपके लिये कष्टकारी सिद्ध होगीं शारीरिक व मानसिक थकान से बचने का प्रयास करें। अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिये भगवान विष्णु की नियमित पूजा, गुरु मंत्र व मंदिर में पीलें फूल व फल का दान करना श्रेयस्कर रहेगा।

उक्त फलादेश ग्रह के गोचरीय प्रभाव पर आधारित है। फल का प्रतिपादन जन्मांग में ग्रह स्थिति, दशा, अन्तरदशा व ग्रह बल पर निर्भर करता है। उपाय करने से पहले उचित ज्योतिषीय परामर्श लें। ❋❋❋

शेष पेज 09 से आगे.....

मन्द, सुगन्धु एवं शीतल पवन का संचार होता रहता था। लीला बिहारी भगवान् श्रीकृष्ण नित्यप्रति अम्बिका वन में गायों को चराते हुए तालाब पर पानी पिलाने लाते थे। जन–जन के अनुरागी, सभी की आत्मा यशोदानन्दन भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन करने को नन्दगाँव से **"कृष्णा सखी"** नाम वाली एक गोपी भी नित्यप्रति आया करती थी। कभी भी नियम भंग नहीं करती थी। सम्पूर्ण झंझावातों को पार करते हुए भी प्राण प्यारे आनन्द प्रदाता श्रीकृष्ण के नित्यप्रति दर्शन अवश्य करती थी।

एक दिन कृष्णासखी के माँ–बाप ने उससे पूछा कि बेटी! तुम रोजाना कहाँ जाती हो तो उसने उत्तर दिया कि मैं सभी का कल्याण करने वाली, अमृतमयी वर्षा करने वाली, ममता की देवी माँ देवी के दर्शन को जाती हूँ। माता–पिता को कृष्णासखी के उत्तर से सन्तुष्टि नहीं हुई, मन में सन्देह उत्पन्न हो गया और विचार करने लगे कि हमारी यह बेटी हमसे कुछ छुपा रही है। एक दिन जब वह श्रीकृष्ण के दर्शन को चली तो माँ–बाप भी उसका पीछा करते हुए चले। सखी ने माँ–बाप को पीछे आते देखा तो घबराई और सोचने लगी कि अब क्या होगा? मैंने माँ–बाप से झूँठ तो बोल दिया अब श्रीकृष्ण ही मेरे सहायक हैं, गोविन्द ही मेरी रक्षा कर सकते हैं। वह जल्दी–जल्दी डग बढ़ाते हुए श्रीकृष्ण के दर्शन को आयी और हृदय में मनोहारी झाँकी को स्थित कर श्रीकृष्ण की स्तुति करने लगी, उनको वन्दन करने लगी। सखी कहने लगी हे दयालु प्रभो! आप वर देने वाले ब्रह्मादि देवताओं को भी वर देने में समर्थ हैं। आप निर्गुण हैं, निराकार हैं। आपकी लीला बड़ी ही अनोखी व आनन्दित करने वाली है। आपके उत्तम चरण इस संसार में सकाम पुरुषों को सम्पूर्ण पुरुषार्थो की प्राप्ति कराने वाले हैं। आप भक्तवत्सल, कृपा व दया के सागर तथा करुणा निधान हैं। आप मेरी रक्षा कीजिए। मेरे असत्य भाषण रुपी अपराध को क्षमाकर मुझे इस संकट से उबारिए। नेत्रों से झर–झर प्रेमाश्रु बहने लगे, लम्बी–लम्बी साँसें आने लगीं, तभी सभी जन के कमलरुपी हृदय को नवजीवन, आनन्द व शीतलता प्रदान करने वाला अद्भुत मनोहारी रुप लावण्य से युक्त, करोड़ों कामदेव की छवि को भी धूल–धूलसरित करने वाले, करोड़ों सूर्य की प्रभा से भी प्रभावान् व्रजमण्डल के रसिया मुरली मनोहर भगवान् श्रीकृष्ण मन्द–मन्द मुस्कुराते हुए से मधुर, प्रिय व धैर्य प्रदान करने वाली वाणी बोले–हे गोपी! घबराती क्यों है? तेरे माँ–बाप के सामने तुझे झूँठा नहीं बनने दूँगा। ऐसी अमृतमयी वाणी कहकर भगवान् स्वयं **"देवी माँ"** का रुप धारण कर बैठ गए और वह सखी भगवान् श्रीकृष्ण का स्मरण करती हुई शिला में परिवर्तित हो गई। इस तरह भगवान् ने अपने भक्त की सत्यता उजागर कर दी। तभी से इस जगह का नाम सत्य के आधार पर साँचोली पड़ गया तथा इस माँ का नाम भगवान श्रीकृष्ण के चन्द्रवंश में अवतार धारण करने के कारण **'चन्द्रावलि'** पड़ गया। आज इस साँचोली गाँव में माँ साँचोली का दरबार है। जिनके दायें और बाऐं भाग में माँ ज्वाला एवं लांगुर बलवीर विराजते हैं। माँ के दर्शन मात्र से ही सम्पूर्ण मनोरथ सफल हो जाते हैं तथा रोग, शोक, भय आदि पास नहीं आते।

❋❋❋

शेष पेज 06 से आगे.....

होता है और मनोरथ पूर्ण होता है।

सिद्ध लौह स्तम्भ पूजन विधान–शनि की साढे साती, शनि की ढैय्या एवं शनि महादशा की शांति के लिये नित्य सूर्य उदय के पूर्व स्नान करके शनिदेव के आगे तेल का दिया जलाकर लोहे के प्राण प्रतिष्ठित लौह स्तम्भ को शनिदेव का रुप मानकर नित्य 108 बार शनि का बीज मंत्र ऊँ शं शनैश्वराय नमः बोलकर आधा–आधा चम्मच तेल शनिदेव के लौह स्तम्भ पर चढ़ायें। फिर अभिषेक के तेल को दूसरी प्लेट में उलट ले। अभिषेक के तेल में अपना चेहरा देखकर अपने सारे कष्ट शनिदेव से कहें और बार–बार क्षमा मांगे फिर उस तेल को अपने घर में ही दिये में जला दें ऐसा लगातार 9 शनिवार तक करें। नित्य गुड़ तिल का प्रसाद चढ़ाकर किसी पेड़ के नीचे डालतें जायें और 9 शनिवार पूरा होने पर फिर केवल शनिवार के शनिवार जब शनि का समय चले या प्रयोग करते रहे। प्राण प्रतिष्ठित लौह स्तम्भ श्री शनि संस्थान से मंगवाया जा सकता हैं या स्वयं भी बनवाकार प्राणप्रतिष्ठित घर में किया जा सकता है।

सिद्ध शनि यंत्र पूजन विधान– प्राण प्रतिष्ठित तांबे के सिद्ध शनि यंत्र को शनिवार के शनिवार शनि पीड़ा शांति हेतु जिन्हें शनि का समय नहीं चल रहा है उन्हें भी पूजन अभिषेक करना चाहिये। 21 बार शनिदेव के पौराणिक मंत्र का पाठ करें।

पौराणिक शनि मंत्र–

नीलान्जंन समाभासं रविपुत्र यमाग्रहम्।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

उपरोक्त मंत्र का 21 बार पाठ करें और 21 बार ही स्टील प्लेट में रखें सिद्ध शनि यंत्र पर तेल चढ़ायें जायें। जब तेल इकट्ठा हो जाये तब उसे दूसरी कटोरी में लें लें और अपना चेहरा उसमें देखें अपने कष्ट बाधा परेशानी सब शनिदेव का सुनायें क्षमा प्रार्थना करें फिर तिल में एक दो इंच की लोहें की कील लोहा दान रुप में डाल दें और वह तेल कील पीपल पेड़ पर चढ़ाकर आ जायें। शनिवार के शनिवार 9 शनिवार लगातार मौन रहकर यह प्रयोग करने से कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी शनिदेव मार्ग प्रदान करते हैं। 9 वें शनिवार को तेल में चेहरा देखने वाली कटोरी को भी पीपल पर चढ़ाकर आ जायें और गुड़ तिल का प्रसाद भी 9 शनिवार तेल के साथ पीपल पर चढ़ायें।

तंत्रोक्त मंत्र जप विधान– प्रातः सूर्योदय के पूर्व या सूर्य अस्त के बाद नीचे लिखे मंत्र की 11 माला प्रति दिन 40 दिनों तक लगातार शनिदेव के आगे बैठकर जाप करें।

तंत्रोक्त शनि मंत्र

ऊँ प्रां प्रीं प्रौ सः शनैश्चराय नमः।।

नित्य 50 ग्राम बारीक गुड़ शक्कर का प्रसाद चढ़ायें और घर के ही अंदर एक बर्तन में वह प्रसाद इकट्ठा करके नित्य पूजा के बाद चीटियों को डालते जायें।

ऐसा लगातार 40 दिन करें शीघ्र शनि कृपा की प्राप्ति होती है और कष्ट दूर होते हैं। 40 दिनों के बाद नियमित एक माला जप लंबे समय तक सफलता के लिये जारी रखें।

शनिवार व्रत विधान–शनिवार का व्रत जो प्राणी करते निश्चय धार। करें शनिदेव उनका उद्धार।।

1. शनिवार के व्रत के दिन सकंल्प लें कि आप 8 शनिवार 9 शनिवार 16 शनिवार या 33 शनिवार कितने व्रत रखेंगें और उस

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262

व्रत के चलने तक अपनी कोई एक प्रिय चीज खाने पीने संबंधी त्यागें। जिससे आपकी संकल्प शक्ति और भी बढ़ें। जो चीज आपको सर्वाधिक पसंद हो जब तक व्रत रखें तब तक के लिये अपनी कार्य सिद्धि के लिए उसका त्याग कर दीजिये। ऐसा करने से शनिदेव शीघ्र प्रसन्न होंग। **2**. शनिवार के दिन सूर्य उदय के पूर्व प्रातः 5 बजे उठें, स्नान करके शनिवार व्रत कथा पढ़ें या शनि देव के पौराणिक मंत्र **"नीलांजन समाभासं"** की 3 माला जाप करें। तेल का दिया जलायें शनिदेव के आगें गुड तिल का प्रसाद लगायें। शनि चालीसा का पाठ करें, आरती कपूर जलाकर करें। पूजा से उठने के बाद प्रसाद पीपल या बरगद पेड़ के नीचे चढ़ा दें। **3**. व्रत वाले दिन सूर्य उदय के पूर्व शनिदेव के दस नामों का पाठ करते हुये मीठा जल (गुड़–तिल–उड़द वाल जल) पीपल पेड़ पर परिक्रमा लगाते हुए जरुर चढ़ाये। **4**. शनिवार के दिन एक समय बिना नमक का भोजन करें और एक समय के भोज त्याग कर भोजन करने के पूर्व अपनी एक समय की खुराक (भोजन) किसी गरीब व्यक्ति को श्रद्धा से पैकेट बनाकर दान करके आये। **5**. शनिवार के दिन सूर्य अस्त होने के पूर्व भोजन कर लेंवें। **6**. शनिवार के दिन बिना प्याज लहसुन का भोजन करें व घर में भी शुद्ध सात्विक भोजन पकाने का निर्देश दे। **7**. शनिवार के दिन ब्रह्मचर्य से रहें शुद्ध सात्विक जीवन जिये। **8**. शनिवार के दिन व्रत का पूर्ण लाभ पाने हेतु अपने क्रोध पर अधिक से अधिक नियंत्रण रखें अतः व्रत के दिन क्रोध न करे। **9**. यदि आसपास शनि मंदिर है तो दर्शन करने, प्रार्थना करने, पूजन करने जायें या शनि मंदिर नहीं है तो बजरंग बली के मंदिर में दर्शन करने जायें। **10** संध्या पूजन आरती के समय हनुमान चालीसा का पाठ करें। ❋❋❋

शेष पेज 11 **से आगे.....**

या चौड़ी गोल या खुली हुई हो तो ऐसे व्यक्ति हर काम को पूर्ण सतर्कता से करते है। **6**. यदि आँखों की पलकें भारीपन लिये हों अर्थात पलके झुकी हुई सी हो तो ये व्यक्ति किसी भी पर विश्वास नहीं करते हैं। **7**. यदि व्यक्ति की आँखें लम्बी, नीली या काले रंग की हों तथा इन आँखों में सफेद तथा लाल रंग के डोरे दिखाई देते हों तो ऐसे व्यक्ति का शारीरिक गठन उत्तम होता है। ये जीवनी शक्ति के धनी, सफल तथा भाग्य शाली होते हैं। **8**. सफेद रंग एवं काली पुतलियों से युक्त आँखें जिनकी बनावट मछली की तरह हों। ऐसे नेत्र नारियों में अधिकांशतः पाये जाते हैं। ऐसे आँखों वाली स्त्रियाँ उदार हृदय, क्षमावान, भोली एवं चंचल स्वभाव की होती है। **9**. यदि व्यक्ति की आँखें तिरछी प्रतीत होती हों तो ऐसे व्यक्ति चतुर–चालाक एवं कूटनीति में दक्ष होते हैं। **10**. यदि आँखों का रंग ताँबे जैसा हो तो व्यक्ति त्यागी, प्रेमी तथा सबसे घुल–मिलकर चलने वाला होता है। **11**. यदि आँखों का रंग हल्का सा हरापन सा लिये हो तो ऐसे व्यक्ति बुद्धिमान एवं प्रतिभावान होते हैं। **12**. यदि आँखों की पुतलियों का आकार सामान्य से अधिक हो तो ऐसे व्यक्ति प्रत्येक कार्य को अति सावधानी से करने वाले होते हैं। तथा स्पष्ट वादी भी होते हैं। **13**. यदि आँखों की भृकुटी के बालों का रंग सिर के बालों की तुलना में गहरा पन लिये हो तो ऐसे व्यक्ति स्थिरमति एवं चरित्रवान होते हैं।

योग्य विद्वान मनीषियों ने सामुद्रिक विज्ञान में नेत्र लक्षणों के वारे में अनेकानेक योग प्रस्तुत किये है। अब आवश्यकता इस बात की है कि हम उन्हें समझने तथा शोधे और लोगों से व्यवहार करते समय इन लक्षणों के आधार पर निरीक्षण करें। ऐसा करके हम सम्बन्धों से अधिकाधिक लाभ ले सकते हैं। ❋❋❋

शेष पेज 12 **से आगे.....**

1. षष्ठेश अपनी प्रकृति के अनुसार रोग प्रदान करता है।

2. षष्ठ भाव में जो ग्रह उपस्थित होता है, वह अपनी प्रकृति के अनुसार रोग प्रदान करता है।

3. षष्ठेश जिस ग्रह से युति सम्बन्ध बना रहा होता है, उस ग्रह से सम्बन्धित रोग होने की भी पूर्ण आशंका होती हैं।

4. जो ग्रह जन्मपत्रिका में नीचराशि, शत्रुराशि अथवा अत्यन्त अशुभ स्थिति में होता है।, वह भी पीड़ादायक सिद्ध हो जाता हैं।

5. लग्न पर जिस पाप ग्रह की शत्रु अथवा नीच दृष्टि हो, उस ग्रह से सम्बन्धित रोग या पीड़ा होने की भी आशंका होती हैं।

किस ग्रह से कौन सा रोग होता है आइये जानें– 1. सूर्य– पित्त, जलन, उदर सम्बन्धी रोग, रोग प्रतिरोधक क्षमता में कभी न्यूरोलॉजी से सम्बनधित रोग, नेत्र रोग, हृदय रोग, अस्थियों से सम्बन्धित रोग, कुष्ठ रोग, सिर के रोग, ज्वर, मूर्च्छा, रक्तस्त्राव, मिर्गी इत्यादि। **2. चन्द्रमा–** हृदय एवं फेफड़े सम्बन्धित रोग, अनिद्रा अस्थमा, डायरिया, रक्ताल्पता, रक्तविकार, जल की अधिकता या कमी से सम्बन्धित रोग उल्टी, किडनी सम्बन्धित रोग, अपेन्डिक्स, कफ रोग, मूत्र विकार, मुख सम्बन्धी रोग, नासिका सम्बन्धी रोग, पीलिया, मानसिक रोग। **3. मंगल–** गर्मी के रोग, विषजनित रोग, खुजली, रक्त सम्बन्धी रोग, गर्दन एवं कण्ठ से सम्बन्धित रोग, रक्तचाप, मूत्र सम्बन्धी रोग, ट्यूमर, कैन्सर, पाइल्स, अल्सर, दस्त, दुर्घटना, कटना, आग लगना, चोट, फोड़े–फुन्सी, ज्वर आदि। **4. बुध–** छाती से सम्बन्धित रोग, नसों से सम्बन्धित रोग, विषमय खुजली, टायफाइड़, पागलपन, लकवा, थॉयराइड, मिर्गी, अल्सर, मुख के रोग, चर्म रोग, वाणी दोष, हिस्टीरिया, चक्कर आना, कण्ठ रोग, स्नायु रोग आदि। **5. गुरु–** लीवर, किड़नी, तिल्ली से सम्बन्धित रोग, कान से सम्बन्धित रोग, मधुमेह, पीलिया, याददाश्त में कमी, जीभ एवं पिण्डलियों से सम्बन्धित रोग, दाँत संबंधी रोग, अपरिपक्वता आदि। **6. शुक्र–** जनेन्द्रिय सम्बन्धी रोग, मूत्र सम्बन्धी रोग, गुप्त रोग, नपुंसकता, सेक्स सम्बन्धित रोग, मादक द्रव्यों के सेवन से उत्पन्न रोग आदि। **7. शनि–** शारीरिक कमजोरी, दर्द, पेट दर्द, घुटनों या पैरों में होने वाला दर्द, दाँतों अथवा त्वचा सम्बन्धी रोग, मांसपेशियों से सम्बन्धित रोग, लकवा, बहरापन, दमा, अपाहिज, अपंगता, टेड़े–मेड़े अंग, भेंगापन आदि। **8. राहु–** मस्तिष्क सम्बन्धी विकार, यकृत सम्बन्धी विकार, निर्बलता, चेचक, पेट में कीड़े, पागलपन, किसी प्रकार का रिएक्शन, पशुओं या जानवरों से शारीरिक कष्ट, कुष्ठ रोग, केन्सर, नींद न आना, आत्महत्या आदि। **9. केतु–** वातजनति बीमारियाँ, रक्त दोष, चर्म रोग, श्रमशक्ति की कमी, सुस्ती, घाव, एलर्जी, आकस्मिक रोग से परेशानी, कुत्ते का काटना आदि।

❋❋❋

शेष पेज 12 **से आगे.....**

1. कम बोले, मीठा बोलें। **2**. शब्दों के आडम्बर में दम्भ को स्थान न दें क्योंकि दम्भ से परमात्मा कभी प्रसन्न नहीं होते। **3**. तोल–मोल के बोले। **4**. उच्चारण, भाव, ध्वनियों के द्वारा एक ही बात के कई अर्थ हो सकते है ध्यान रहें अर्थ से अनर्थ ना हो। **5**. यथार्थ भी दूसरों के हित के भाव से कहा जायें। **6**. हृदय की कठोरता को कम करें तो वाणी स्वतः ही निर्मल हो जायेगी। **7**. वाणी से भगवान का गुणगान करते रहें यही यथार्थ है। अन्त में:–

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोए।
औरो को शीतल करें आपहुं शीतल होए।।

❋❋❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। 500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262